



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नराकास, ग्वालियर की वार्षिक पत्रिका

प्रयास

अंक : 9

वर्ष : 2019-20



ककनमठ मंदिर, मुरेना, मध्य प्रदेश

**नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति - ग्वालियर
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय
मध्य प्रदेश, ग्वालियर**



ढोल

जानवरों में यदि कोई ऐसा जानवर है जो वफादारी शब्द को पूर्णतः परिभाषित करता है तो वह है कुत्ता। यही कारण है कि इंसानों द्वारा कुत्तों को सबसे ज्यादा पालतू बनाया जाता है एवं कुत्तों को इंसान का सबसे वफादार दोस्त माना जाता है। ऐसे में यह जानना बेहद दुखद है कि इसी प्रजाति की एक बेहद अनोखी एवं जंगली नस्ल 'ढोल' आज लुप्त होने की कगार पर है।

'व्हिस्लिंग डॉग' (Cuon alpinus) या 'वनजुक्कुर' या बहुचर्चित नाम 'ढोल' दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया में पाया जाता है। ढोल भारत में मुख्यतः मध्य भारतीय जंगलों, पूर्वी घाट, पूर्वोत्तर राज्यों, उत्तरी भारत, सिक्किम व लद्दाख के क्षेत्रों में पाए जाते हैं। हाल ही में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ (IUCN) द्वारा ढोल को विलुप्तप्राय प्रजाति घोषित किया गया है। इनकी संख्या लगातार घटती हुई लगभग 2000 के करीब पहुंच गई है जिसका मुख्य कारण इनके आवासीय क्षेत्र में कमी, शिकार की कमी, अन्य शिकारियों से स्पर्धा व कुछ अचिन्हित बीमारियां हैं।

ढोल एक सामाजिक प्राणी है जो कि बड़े कुटुम्बों में रहता है। ढोल सदैव झुण्ड में शिकार करते हैं। इस प्रकार ढोल इंसानों को एकता व पारिवारिक एकजुटता की सीख देते हैं। यही नहीं, ढोल अपनी प्रजाति का इकलौता जीवित प्राणी है जो कुत्तों से दन्तावली और स्तनाग्रों में अलग है। ढोल की घटती संख्या इसलिए भी बेहद चिंतनीय है क्योंकि ये अपने शिकार की आबादी को संतुलित करने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा एक स्वस्थ वन पारिस्थितिकी तंत्र बनाये रखने में प्रमुख रूप से सहायक होते हैं। ढोल कुआन जीनस (CUAN GENUS) की एक मात्र प्रजाति है। यदि ढोल विलुप्त होता है तो हम एक संपूर्ण विकासवादी जीनस खो देंगे। अतः आज इनके संरक्षण हेतु कारगर उपाय करने की परम आवश्यकता है।



प्रयास

नवम अंक • 2019-20

संरक्षक

डी. साहू

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

प्रकाशन परामर्शदात्री समिति

डॉ. शिवप्रताप सिंह

प्रधान वैज्ञानिक

केन्द्रीय आलू अनुसंधान केन्द्र, ग्वालियर

प्रकाशक

जितेन्द्र तिवारी

सचिव

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

नारायण दास

सहायक कार्मिक अधिकारी

रेल सिप्रंग कारखाना, सियौली, ग्वालियर

संपादक मंडल

संजीव कुमार झांजी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वर्णलता गुप्ता सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हरिओम कुमार कनिष्ठ अनुवादक

कपिल कांत पाराशर वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, उनसे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति - ग्वालियर
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय
मध्यप्रदेश, ग्वालियर

अनुक्रम

क्र.	रचना / लेख / व्यंग्य	रचनाकार / लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, एक चिंतनीय विषय	प्रिया विज	01
2.	राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (रा.ज.वि.अ.) नारायण प्रसाद साहू एक परिचय		02
3.	केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल परिसर, ग्वालियर में हिंदी पखवाड़ा व दिवस का आयोजन		04
4.	मातृभाषा में अभिव्यक्ति	मनोहर दत्त उपाध्याय	06
5.	योग का मानव जीवन में महत्व	मनोज कुमार शर्मा	07
6.	केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, के.रि.पु. बल, ग्वालियर - एक संक्षिप्त परिचय	संजीव शर्मा	09
7.	एन.सी.सी. ओ.टी.ए., ग्वालियर		11
8.	गैर संचारी रोगों के निवारण हेतु आयुर्वेद	डॉ. एस.बी. सिंह	14
9.	आधुनिक तकनीकी का प्रतीक - रेल स्प्रिंग कारखाना सिथौली, ग्वालियर	मनोज कुमार	16
10.	हिंदी की दशा और दिशा	डी.पी. पाठक	19
11.	स्वाइन फ्लू पर संक्षिप्त विवरण	राम गोविंद यादव	21
12.	हिंदी गीत	जे.जे. श्रीवास्तव 'ज्योति'	23
13.	दुनिया से भुखमरी व कुपोषण के उन्मूलन में आलू की भूमिका	डॉ. शिव प्रताप सिंह, डॉ. संजय कुमार शर्मा, श्याम कुमार गुप्ता, डॉ. मुरलीधर जे. सदावर्ती, डॉ. सुभाष कटारे एवं डॉ. वाई.पी. सिंह	24
14.	'माताभूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या'	बृजेश सिंह	26
15.	आओ करें हम हिंदी को शत्-शत् प्रणाम	निशा खान	29
16.	हिंदी भाषा है वही	अलका शर्मा	30
17.	हिंदी मेरी भाषा है	लता रैकवार	31
18.	माँ	मनोज कुमार गिरि	32
19.	ऐ दिल-ए-नादान	श्रीमती अबिंदर कौर	33
20.	उठो-जागो और श्रेष्ठता को प्राप्त करो	देवेन्द्र कुमार लवानियाँ	34
21.	एकता टूटने पर	दुलेश्वरी यादव	35
22.	मेरी माँ	निकिता चौहान	36
23.	गंगा (हर-हर-गंगे)	महक शर्मा	37
24.	स्कूल	निशा कुमारी	38
25.	एक सपना बापू का	मुस्कान	39
26.	स्वच्छ रहे यह देश हमारा!	प्रियांशी भट्ट	40
27.	गांव का भोला	हरिओम कुमार	41
28.	इंसान का मन	स्वर्णलता गुप्ता	42
29.	दो कविताएं	डॉ. राम सहाय बैरैया	43
30.	परियोजना अर्पण - धार्मिक स्थलों पर उपयोग किए गए फूलों को नया जीवन देना		44
31.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), ग्वालियर		48

अमित शाह

गृह मंत्री

भारत

AMIT SHAH

HOME MINISTER

INDIA



प्रिय देशवासियों !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है। कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है। हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं। अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरोध धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी, बल देने का प्रयास किया है। हर राज्य की भाषा को, हिंदी ताकत देती है। हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है। 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उनके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए। भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिये गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना

प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्द कोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्य कोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यन्त विषम परिस्थिति से गुजर रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा है और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे। राजभाषा विभाग ने भी इस प्रकार का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया है और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लास रूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कॉन्फ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

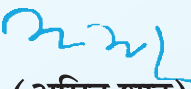
संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों-कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाएं।

आइए! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूँ कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूँ - अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्व पटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

भारत माता की जय !

नई दिल्ली


(अमित शाह)



संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की हिन्दी पत्रिका 'प्रयास' के नवम अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं नगर में अवस्थित सभी केन्द्रीय अधिकारी तथा कर्मचारीगण को बधाई देता हूँ।

पूरे विश्व में जब कोरोना ने महामारी के रूप में आतंकित कर रखा है उस क्षण में भी हिन्दी भाषा की प्रगति और प्रसार के लिए 'प्रयास' एक सार्थक कदम है। हिन्दी राजभाषा के रूप में जितनी प्रख्यात है, उससे भी ज्यादा सभी के हृदय में राज करने वाली भाषा है। हिंदी भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत की संवाहिका है तथा देश को एक राष्ट्र के रूप में जोड़ने में सहायक है।

पत्रिका के प्रकाशन के लिये जिन रचनाकारों ने अपनी रचनाएं भेजकर सहयोग प्रदान किया है, वे सभी प्रशंसा के पात्र हैं। पत्रिका के संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु विशेष साधुवाद। मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी नराकास, ग्वालियर के सदस्य कार्यालय 'प्रयास' के प्रकाशन में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान करते रहेंगे और हम एक साथ, एकजुट होकर राजभाषा हिन्दी को सफलता के शिखर तक ले जाने के लिये सदैव अग्रसर रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित...

डी. साहू

डी. साहू

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

एवं

प्रधान महालेखाकार



प्रकाशकीय

‘प्रयास’ के नवम अंक को प्रकाशित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। विभिन्न रचनाकारों द्वारा लिखित विविध रचनाओं को एक मूर्त रूप प्रदान कर आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करना मेरे लिए हर्षपूर्ण अनुभूति है।

राजभाषा कार्यान्वयन हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है। राजभाषा विभाग द्वारा भाषायी आधार पर किए गए विभाजन के अनुसार हम ‘क’ क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं, इसका सरल तात्पर्य यह है कि हमें अपना संपूर्ण कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिंदी में करना चाहिए।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), ग्वालियर से वर्तमान में 68 शासकीय कार्यालय जुड़े हुए हैं। राजभाषा हिंदी के उत्थान में हमारा एकजुट प्रयास अत्यन्त सुखद व इच्छित परिणाम दे सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सभी अपनी दैनिक दिनचर्या व अपने समस्त कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग गर्व व सम्मान के साथ करें। कोविड-19 कोरोना वायरस के प्रादुर्भाव के कारण उत्पन्न हुई प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हम राजभाषा के प्रति अपने कर्तव्यों से विमुख नहीं हुए। अपितु, पूर्ण उत्साह एवं सजगता से हमने राजभाषा सम्बन्धी अपने दायित्वों का निर्वहन किया है। नराकास, ग्वालियर की अर्द्धवार्षिक बैठक का ऑनलाइन आयोजन समय से किया गया व व्याख्यान समारोह का भी ऑनलाइन आयोजन किया गया, जिसमें नराकास सदस्य कार्यालयों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जो अत्यन्त सराहनीय है। इसी क्रम की निरंतरता में नराकास, ग्वालियर की वार्षिक पत्रिका ‘प्रयास’ के नवम अंक का सफल प्रकाशन राजभाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दृढ़ करता है।

पत्रिका प्रकाशन से जुड़े समस्त रचनाकारों व संपादक मंडल को उनके सार्थक योगदान के लिए मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी पत्रिका ‘प्रयास’ भविष्य में भी यूँ ही हिंदी की विकास यात्रा में अपना योगदान देती हुई प्रगति के पथ पर सदैव अग्रसर रहेगी।

शुभकामनाओं सहित।

जितेन्द्र तिवारी

जितेन्द्र तिवारी

सचिव

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

एवं

उप महालेखाकार (प्रशासन)

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, एक चिंतनीय विषय

प्रिया विज, आशुलिपिक श्रेणी- II

अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, ग्वालियर

जैसे कोई भी गाड़ी एक पहिए से नहीं चल सकती, ऐसे ही जीवन रूपी गाड़ी भी केवल पुरुषों से नहीं चल सकती है, इसीलिए जीवन में स्त्री और पुरुष दोनों की समान सहभागिता है। बेटियों की घटती संख्या देश के लिए एक भयंकर चिंता का विषय है।

हमें हमारे देश और हमारी संस्कृति पर हमेशा गर्व रहा है। हमारे देश ने किसी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया। हम शांतिप्रिय रहे हैं। ऐसे महान सांस्कृतिक विरासत होने के बावजूद हमारे समाज में एक ऐसी बुराई है जो आज पूरे संसार के सामने हमें हमारी नजरें नीची करने के लिए मजबूर कर देती हैं। हमारा समाज इतना ज्यादा पुरुष प्रधान हो गया है कि आज देश की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा बेटी पैदा करना ही नहीं चाहता। इसी का नतीजा है कि हमारे देश में पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों की संख्या घटती जा रही है। इसी गंभीरता को ध्यान में रखते हुए हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना की शुरुआत की।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य भ्रूण हत्या को रोकना, लड़कियों को उच्च शिक्षा देना और उनकी शादी पर आने वाले खर्च को आसानी से पूरा करने और समाज में उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। देश में बच्चियों के साथ हो रहे भेदभाव और लैंगिक असमानता की तरफ ध्यान दिलाने के लिए इस योजना की शुरुआत की गई। आज के समय में देश में महिलाएं बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं हैं, वह रात को 8 बजे के बाद घर से बाहर निकलने से डरती हैं। इनकी सुरक्षा के लिए विशेष कदम उठाए जा रहे हैं।

इस योजना के तहत बैंक में खाता खुलवाया जाता है, जिसे सुकन्या समृद्धि खाता कहा जाता है। सुकन्या समृद्धि खाता बेटियों के भविष्य को सुरक्षित करता है। बेटी की उम्र कम होने के कारण इस खाते की देखरेख की सुविधा बच्ची के माता-पिता को दी जाती है।

इस विषय पर विचार करें तो मुझे एक तरफ यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होती है कि नारी सशक्तिकरण, लाडली योजना, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ आदि योजनाएं लागू की जा रही हैं, दूसरी तरफ यह सोचकर मुझे काफी दुख होता है कि भारत जैसे देश में ऐसे भी लोग हैं जिन्हें यह बताने की जरूरत है कि नारियों को भी उनका अधिकार मिलना चाहिए।

आज से बेटी को बोझ ना समझें और ना ही उनके जन्म पर निराश होने की आवश्यकता है, क्योंकि बेटियां ही समाज का भविष्य हैं। इनके बिना समाज का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा।

जहाँ नारियों को सम्मान दिया जाता है वहाँ साक्षात देवता निवास करते हैं।


बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ



अपनी पुत्री का रखें ख्याल, बनायें कामयाब होगी मिसाल।



प्रयास

01

वार्षिक अंक
2019-20

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (रा.ज.वि.अ.) एक परिचय

नारायण प्रसाद साहू, अधिशासी अभियंता,
अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, ग्वालियर

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के प्रायद्वीपीय घटक की जोड़ नहरों की संभाव्यता का अध्ययन करने के लिए भारत सरकार द्वारा सिंचाई मंत्रालय अब जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के अधीन राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (रा.ज.वि.अ.) की स्थापना सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 के अधीन जुलाई, 1982 में एक स्वायत्तशासी सोसायटी के रूप में की गई। रा.ज.वि.अ. भारत सरकार द्वारा पूर्ण निधियन पोषित है। बाद में, 1990 में राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के हिमालय घटक से संबंधित अध्ययन भी रा.ज.वि.अ. को सौंप दिये गये। तत्पश्चात् 2006 में नदी लिंक प्रस्तावों की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का कार्य तथा राज्यों द्वारा यथाप्रस्तावित अंतः राज्यीय लिंकों की पूर्व संभाव्यता/संभाव्यता रिपोर्ट तैयार करने का कार्य भी रा.ज.वि.अ. के कार्यों में शामिल किया गया। तदनुसार जल संसाधन मंत्रालय के दिनांक 30.11.2006 के संकल्प द्वारा रा.ज.वि.अ. सोसाइटी के कार्यों में संशोधन किया गया। जल संसाधन मंत्रालय के दिनांक 19.05.2011 के संकल्प द्वारा अंतःराज्यीय लिंकों के विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का कार्य भी रा.ज.वि.अ. को सौंपने के लिए रा.ज.वि.अ. के कार्यों में पुनः संशोधन किया गया। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पी.एम.के.एस.वाई.) के अंतर्गत नदियों के अंतर्गर्जन की योजनाओं का क्रियान्वयन आरंभ करने तथा उधार निधि के भण्डार के रूप में कार्य करने और परियोजना के क्रियान्वयन के लिए बैंकों/अन्य संस्थाओं से ऋण देने के लिए हाल ही में 7 अक्टूबर, 2016 की राजपत्र अधिसूचना के द्वारा रा.ज.वि.अ. के कार्यों में आगे आशोधन किया गया है। समय-समय पर संशोधित रा.ज.वि.अ. के कार्य निम्नानुसार हैं :-

(क) तत्कालीन सिंचाई मंत्रालय (अब जल शक्ति, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग) व केन्द्रीय जल आयोग द्वारा तैयार प्रायद्वीपीय नदी विकास (1981) और हिमालय नदी विकास (1994) घटकों के प्रस्ताव, जो कि जल संसाधन विकास हेतु राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (एन.पी.पी.) का हिस्सा हैं, की व्यवहार्यता के लिये संभव जलाशय स्थलों तथा परस्पर जोड़ने वाले लिंकों के संबंध में विस्तृत सर्वेक्षण और अन्वेषण करना।

(ख) विभिन्न प्रायद्वीपीय नदी प्रणालियों (1981) तथा हिमालयी नदी प्रणालियों (1994) में जल की मात्रा, जिसका बेसिन/राज्यों की समुचित आवश्यकता को पूरा करने के बाद निकट भविष्य में अन्य बेसिन/राज्यों में अंतरण किया जा सकता है, के संबंध में व्यापक अध्ययन करना।

(ग) संबंधित राज्यों से सहमति मिलने के बाद जल संसाधन विकास हेतु राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के तहत नदी लिंक प्रस्तावों की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (2006) तैयार करना।

(ङ) राज्यों द्वारा यथा प्रस्तावित अंतःराज्यीय लिंकों की पूर्व व्यवहार्यता/व्यवहार्यता रिपोर्ट (2006)/ विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करना। व्यवहार्यता रिपोर्ट/विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (2011) तैयार करने से पहले ऐसे प्रस्तावों के लिये संबंधित संयुक्त बेसिन वाले राज्यों की सहमति ली जाएगी।

(च) नदियों को जोड़ने का एक भाग बनने वाली परियोजनाओं या प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पी.एम.के.एस.वाई.) के अंतर्गत आने वाली परियोजनाओं को पूरा करने के लिये जिनमें त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम (ए.आई.बी.पी.) की परियोजनाएं शामिल



की गई हैं, ऐसे ही अन्य परियोजनाओं को स्वयं या नियुक्त एजेंसी/संगठन/पी.एस.यू. या कम्पनी द्वारा परियोजना को अपने तहत लेना/निर्माण/मरम्मत/नवीनीकरण/पुनर्वास/क्रियान्वयन करना। (2016)

(छ) जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के निर्देश पर राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण जमाओं अथवा ब्याज पर दिए गये ऋण या किसी और प्रकार से प्राप्त धन के संग्रहकर्ता के रूप में कार्य करेगा और इस प्रकार उधार ली गई निधि/जमा राशि/ऋण आदि का पुनर्भुगतान सुरक्षित करने के लिये वर्तमान या भविष्य दोनों में सोसाइटी की सभी या किसी अन्य सम्पत्ति, परिसम्पत्ति को राजस्व में बंधक, गिरवी रखकर या वैध अधिकार (लियन) कर सकता है। (2016)

(ज) उपर्युक्त उद्देश्यों (1981) को प्राप्त करने हेतु सोसाइटी द्वारा अन्य ऐसे प्रासंगिक सम्पूरक अथवा सहायक कार्य करना, जिन्हें सोसाइटी आवश्यक समझे।

भारत सरकार के अपर सचिव के समकक्ष स्तर के महानिदेशक सोसाइटी के प्रधान कार्यकारी अधिकारी हैं, जो सोसाइटी के दिन-प्रतिदिन के कार्यों जिनमें तकनीकी, विधिक, प्रशासनिक तथा वित्तीय मामले शामिल हैं, के लिए उत्तरदायी हैं। अभिकरण का मुख्यालय नई दिल्ली में है। मुख्यालय में महानिदेशक, रा.ज.वि.अ. की सहायता के लिए-मुख्य अभियंता (मुख्या.), निदेशक (तक.), निदेशक (वित्त), निदेशक (प्रशा.), निदेशक (एम.डी.यू.) एवं दो अधीक्षण अभियंता हैं। रा.ज.वि.अ. के दो क्षेत्रीय संगठन (उत्तर एवं दक्षिण) हैं, प्रत्येक का प्रमुख मुख्य अभियंता हैं। ग्वालियर में एक सर्किल तथा एक प्रभाग कार्यालय स्थित है।



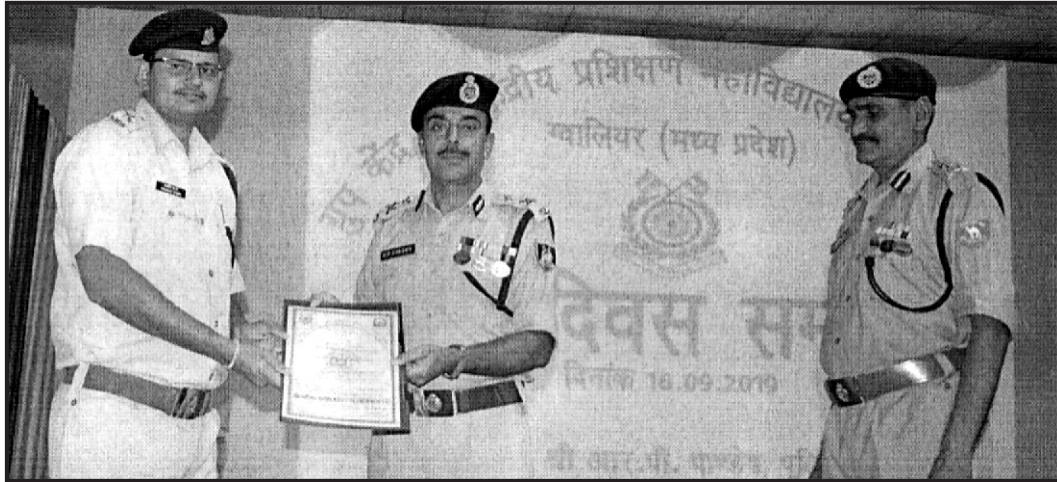
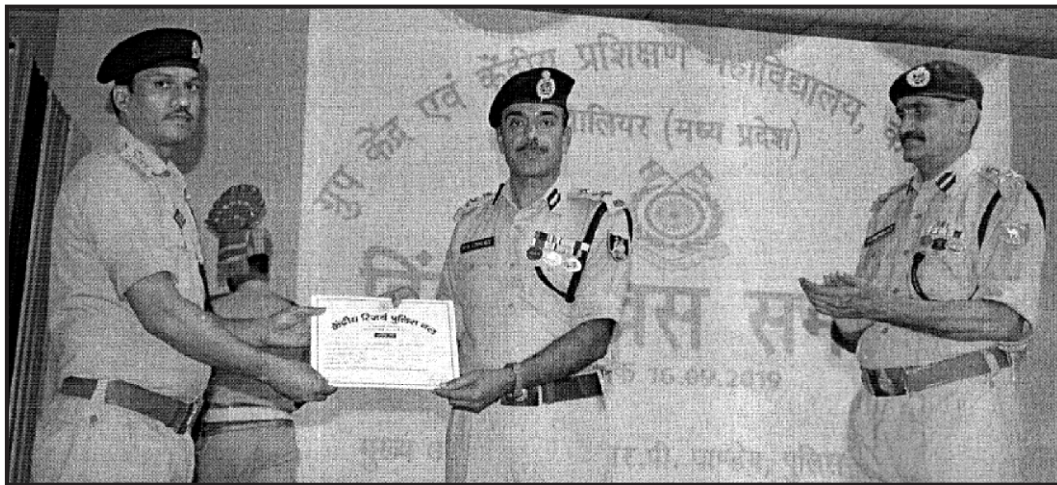
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल परिसर, ग्वालियर में हिंदी पखवाड़ा व दिवस का आयोजन

के.रि.पु. बल परिसर, नयागांव, ग्वालियर में दिनांक 01/09/2019 से 15/09/2019 तक हिंदी पखवाड़ा धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनांक 16.09.2019 को केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, के.रि.पु. बल, ग्वालियर के पुलिस महानिरीक्षक श्री आर.पी. पाण्डेय की अध्यक्षता में हिंदी दिवस का मुख्य समारोह स्टेशन स्तर पर आयोजित किया गया, जिसमें ग्रुप केंद्र, ग्वालियर व केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। हिंदी दिवस समारोह में के.रि.पु. बल के महानिदेशक ने के.रि.पु. बल को राजभाषा संदेश पढ़कर सुनाया और विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कार देने की घोषणा की गई और उनका हौसला बढ़ाने हेतु प्रशस्ति प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए।

के.रि.पु. बल परिसर, ग्वालियर में हिंदी दिवस समारोह, 2019 की कुछ झांकियां



हिंदी दिवस, 2019 के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते
पुलिस महानिरीक्षक, के.प्र.म., के.रि.पु.बल, ग्वालियर व बल के वरिष्ठ अधिकारीगण

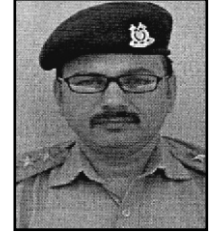




मातृभाषा में अभिव्यक्ति

मनोहर दत्त उपाध्याय, निरीक्षक (राजभाषा)

केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, के.रि.पु. बल, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)



मातृभाषा मात्र संवाद ही नहीं अपितु संस्कृति और संस्कारों की संवाहिका भी है। भाषा और संस्कृति केवल भावनात्मक विषय ही नहीं है, बल्कि देश की शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी विकास से जुड़े रहते हैं। मातृभाषा के द्वारा ही मनुष्य ज्ञान को आत्मसात करता है, नवीन सृष्टि का सृजन करता है। किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और उसकी संस्कृति से होती है। विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति तो मूलतः मातृभाषा में ही होती है। मातृभाषा सुसम्बद्ध और सुव्यवस्थित योजना की पूर्ति का महत्वपूर्ण घटक है। एक अध्ययन के अनुसार अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्ति के लिए मानव मस्तिष्क में 1,00,000 से लेकर 3,50,000 तक शब्दों का विशाल भंडार होता है। हां, यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि वह भाषा कब की और कहां की है। किसी भी भाषा के समृद्ध होने के मूल कारकों में सबसे महत्वपूर्ण कारक है उस भाषा की निरंतरता और उस भौगोलिक क्षेत्र की विविधताएं एवं सांस्कृतिक विकासक्रम-काल।

भाषा की श्रेणियाँ :- भाषा वैज्ञानिकों के मतानुसार भाषाओं को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है। जीवित, मृत और लुप्त भाषाएं। जीवित भाषा वो सारी भाषाएं हैं जो बोलचाल और संवाद स्थापित करने के लिए उपयोग में हैं। ऐसी लगभग 19,700 भाषाएं सिर्फ भारतवर्ष में ही हैं। ऐसी सारी भाषाएं जो व्याकरण के कठोर अनुशासन से मुक्त हैं और समय एवम् स्थान के साथ अपना स्वरूप बदलती रहती हैं, वे जीवित भाषा की श्रेणी में आती हैं। लुप्त भाषाएं जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है वो सारी ज्ञात-अज्ञात, पठित-अपठित भाषाएं, जो विलुप्तप्राय हो चुकी हैं और दुनिया में किसी भी समूह द्वारा वर्तमान में प्रयोग नहीं हो रही हैं।

भारतीय भाषाओं की स्थिति :- भारतीय भाषाओं में सबसे अधिक आबादी द्वारा उपयुक्त खड़ी बोली जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है एवम् उसे मगही, अवधी, बुंदेलखण्डी, भोजपुरी इत्यादि भाषाओं का सामूहिक प्रतिनिधित्व और संविधान में राजभाषा की प्रतिष्ठा प्राप्त है। लेकिन जैसा कि हिंदी की अपनी पूर्णतः स्थापित व्याकरण है और हर लिखे और बोले जाने वाले वाक्य की व्याकरण की कसौटी पर जांच की जा सकती है। इस शर्त के कारण हिंदी राजभाषा, जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और जिसका अपना पूर्णतः परिभाषित व्याकरण है, मातृभाषा की श्रेणी में आती है। परिणामस्वरूप यह अपरिहार्य है कि हिंदी के शब्दों (कभी-कभी तत्सम शब्दों) के लिए आग्रह भी स्वयमेव उपस्थित हो जाता है। ऐसे में राजभाषा के रूप में हिंदी के स्थापित होने की राह में एक मुख्य अड़चन यह आती है कि उपयुक्त शब्द ज्ञान के अभाव में हम हिंदवी (पारसी, अरबी) और ज्यादातर अवसरों पर अंग्रेजी शब्दों का सहारा लेने लगते हैं। तमाम शोधों से यह साबित हो चुका है कि किसी को अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में बोलने के लिए उसके पास मात्र 800 से 1,000 शब्द ही होते हैं जिन्हें वह तोड़-मरोड़कर अपनी बात कहता है। दूसरी भाषा में लिखने वाले ज्यादातर लोग अधिकतम 5,000 शब्दों का ज्ञान रखते हैं। अन्य भाषा में बोलने और लिखने के प्रति उसके प्रयास के पीछे अपने अतिरिक्त ज्ञान का बखान करने और दूसरे को नीचा दिखाने की हिंसक प्रवृत्ति ही काम करती है। हर समाज में एक ऐसा वर्ग होता है, जो इस मानसिक विकृति का शिकार होता है, जो अपने आपको प्रबुद्ध और अभिजात्य वर्ग का समझता है। जैसे ब्रिटेन का अभिजात्य वर्ग फ्रेंच भाषा में बोलना अपनी शान समझता है, वैसे ही हिंदुस्तान में टूटी-फूटी अंग्रेजी में लिखने और बोलने का प्रयास करता हुआ एक बड़ा वर्ग मिल जाएगा। ऐसा व्यक्ति अपनी अभिव्यक्ति की विफलता पर शर्मिंदा होने से बचने के लिए हमेशा कुछ क्लिष्ट शब्दों की तलाश में रहता है। अतः हमें इस मानसिकता से ऊपर उठकर सभी प्रांतीय भाषाओं का सम्मान करते हुए अपनी मातृभाषा को बढ़ावा देना चाहिए तथा जन सामान्य की समझ में आसानी से आने वाली राजभाषा हिंदी में अपना अधिकाधिक सरकारी कामकाज करना चाहिए।





Central Training College

योग का मानव जीवन में महत्व

मनोज कुमार शर्मा, कमांडेंट/अंतर्राष्ट्रीय योग प्रशिक्षक

केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)



योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'युज' धातु से हुई है, जिसका मतलब होता है आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन। योग लगभग दस हजार साल से भी अधिक समय से अपनाया जा रहा है। वैदिक संहिताओं के अनुसार तपस्वियों के बारे में प्राचीन काल से ही वेदों में इसका उल्लेख मिलता है। सिंधु घाटी सभ्यता में भी योग और समाधि को प्रदर्शित करती मूर्तियां प्राप्त हुईं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि योग, अभ्यास का एक प्राचीन रूप है, जो भारतीय समाज में हजारों साल पहले विकसित हुआ था और उसके बाद से लगातार इसका अभ्यास किया जा रहा है। इसमें किसी व्यक्ति को सेहतमंद रहने के लिए और विभिन्न प्रकार के रोगों और अक्षमताओं से छुटकारा पाने के लिए विभिन्न प्रकार के व्यायाम शामिल हैं। यह ध्यान लगाने के लिए एक मजबूत विधि के रूप में भी माना जाता है जो मन और शरीर को आराम देने में मदद करता है। दुनिया भर में योग का अभ्यास किया जा रहा है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक विश्व के लगभग 2 अरब लोग प्रतिदिन योग का अभ्यास करते हैं। शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित करने में योग मदद करता है। शरीर और मन को शांत करने के लिए यह शारीरिक और मानसिक अनुशासन का एक संतुलन बनाता है। यह तनाव और चिंता का प्रबंधन करने में भी सहायता करता है और आपको आराम से रहने में मदद करता है। योग आसन शक्ति, शरीर में लचीलेपन और आत्मविश्वास को विकसित करने के लिए जाना जाता है।

योग करने से हमें निम्नलिखित फायदे होते हैं :-

- मांसपेशियों के लचीलेपन में सुधार होता है।
- शरीर के आसन और संरेखण को ठीक करता है।
- बेहतर पाचन तंत्र प्रदान करता है।
- आंतरिक अंगों को मजबूत करता है।
- अस्थिमा और मधुमेह का इलाज करता है।
- दिल संबंधी समस्याओं का इलाज करने में मदद करता है।
- त्वचा में निखार लाने में मदद करता है।
- शक्ति और सहनशक्ति को बढ़ावा देता है।
- एकाग्रता में सुधार लाता है।
- मन और विचार नियंत्रण में मदद करता है।
- चिंता, तनाव और अवसाद पर काबू पाने के लिए मन शांत रखता है।
- तनाव कम करने में मदद करता है।
- रक्त परिसंचरण और मांसपेशियों के विश्राम में मदद करता है।
- वजन घटाने में मदद करता है।
- चोट से संरक्षण करता है।

योग स्वास्थ्य और आत्म-चिकित्सा के प्रति आपकी प्राकृतिक प्रवृत्ति पर ध्यान केंद्रित करता है। योग सत्र में मुख्य रूप से व्यायाम,



प्रयास

07

वार्षिक अंक
2019-20

ध्यान और योग आसन शामिल होते हैं जो विभिन्न मांसपेशियों को मजबूत करते हैं। विभिन्न प्रकार की दवाएं, जो हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, उनसे बचने का यह बेहतर विकल्प है। योग अभ्यास करने के मुख्य लाभों में से एक यह है कि यह तनाव को कम करने में मदद करता है। तनाव का होना इन दिनों एक आम बात है जिससे शरीर और मन पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। तनाव के कारण लोगों को सोते समय दर्द, गर्दन का दर्द, पीठ दर्द, सिरदर्द, तेजी से दिल का धड़कना, हथेलियों में पसीने आना, असंतोष, क्रोध, अनिद्रा और ध्यान केंद्रित करने में असमर्थता जैसी गंभीर समस्याएं पैदा होती हैं। समय गुजरने के साथ इन प्रकार की समस्याओं का इलाज करने में योग वास्तव में प्रभावी है। यह एक व्यक्ति को ध्यान और साँस लेने के व्यायाम से तनाव को कम करने में मदद करता है और एक व्यक्ति के मानसिक कल्याण में सुधार करता है। नियमित अभ्यास मानसिक स्पष्टता और शांति बनाता है। जिससे मन को आराम मिलता है। योग एक बहुत ही उपयोगी अभ्यास है जिसे करना बहुत आसान है और यह कुछ गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं, जो आज के जीवन शैली में सामान्य हैं, से भी छुटकारा दिलाने में मदद करता है। इसलिए हमें अपने दिनचर्या में योग को अवश्य शामिल करना चाहिए।



अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस





केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, के.रि.पु. बल, ग्वालियर एक संक्षिप्त परिचय

संजीव शर्मा, उप कमांडेंट

केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, के.रि.पु. बल, ग्वालियर (म.प्र.)



केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 04 केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालयों में से 01 ग्वालियर में है जिसकी स्थापना 11 फरवरी, 2005 को मोती महल, ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में की गई। 11 फरवरी, 2008 को केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, मोती महल, ग्वालियर (मध्य प्रदेश) से ए.बी. रोड, नयागांव, पनहार, ग्वालियर (म.प्र.) में स्थापित किया गया, जो कि आगरा-मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग पर ग्वालियर और शिवपुरी के बीच स्थित है। यह संस्थान ग्वालियर रेलवे स्टेशन से 22 किलोमीटर तथा एयरपोर्ट से 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसी परिसर में सी.टी.सी. के साथ ही ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु.बल, ग्वालियर का कार्यालय भी स्थापित है।

केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, ग्वालियर का परिसर 576 एकड़ जमीन में फैला है। अलग-अलग स्थानों पर समतल मैदान, ऊबड़-खाबड़ पथरीली पहाड़ियां, विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां, जंगल तथा जंगली जानवरों की बहुतायत इस परिसर में मनोरम प्राकृतिक वातावरण को प्रशिक्षण हेतु एक अत्यन्त आदर्श प्रशिक्षण केन्द्र बनाती हैं।

इस संस्थान में सिपाही से सहायक कमांडेंट पद तक के लिए योजनाबद्ध एवं व्यावसायिक तरीके से बुनियादी/पदोन्नति प्रशिक्षण/पाठ्यक्रमों के विभिन्न सेवाकालीन कोर्स आयोजित किए जाते हैं। इस संस्थान ने अपनी स्थापना के समय से ही बल के आदर्श वाक्य का पालन करते हुए व्यावसायिकता, देशभक्ति और गौरवमय सेवा का पालन करके पेशेवर उत्कृष्टता प्राप्त करने की दिशा में लंबा सफर तय किया है।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के एक प्रमुख प्रशिक्षण संस्थान के रूप में इस संस्थान ने व्यवस्थित और प्रभावी प्रशिक्षण के माध्यम से संगठन में व्यावसायिक उपलब्धि को बढ़ावा देने की दिशा में अहम योगदान दिया है। इसी क्रम में इस संस्थान को वर्ष 2019 में केंद्रीय रिजर्व पुलिस में सर्वोत्तम प्रशिक्षण संस्थान का खिताब प्राप्त हुआ है तथा केंद्रीय पुलिस संगठन के अन्तर्गत इस संस्थान को होम मिनिस्टर मेडल के लिए नामित किया गया है।

संस्थान के प्रशिक्षुओं के लिए पक्के भवन में आवास, पक्के शौचालय व स्नानघर, रनिंग वाटर की सुविधा के साथ आर.ओ. उपचारित पेयजल, चिकित्सा सुविधा, कैन्टीन तथा कॉपरेटिव शॉप तथा ए.टी.एम. आदि की सुविधा उपलब्ध है।

प्रशिक्षण क्षेत्र में पक्के स्क्वाड पोस्ट, बी.ओ.ए.सी., मल्टीपल बीम, मल्टीपल रोप स्ट्रक्चर्स, ड्रिल नर्सरी, लैक्चर हॉल, ड्रिल वोड्स, आई.ई.डी. मॉडल रूम, आई.ई.डी. लेन, कम्प्यूटर लैब, स्माल/स्मार्ट क्लास रूम, कमाण्ड टास्क, स्टडी रूम्स तथा लॉन टेनिस, बैडमिन्टन, वालीबॉल, हैण्डबॉल, फुटबॉल, क्रिकेट आदि खेलों के मैदान भी संस्थान में उपलब्ध हैं।

- स्मार्ट एवं छोटी कक्षाओं की अवधारणा के अंतर्गत बड़े हॉल्स को उचित पार्टीसन करके छोटा बनाया गया है।
- 80 कम्प्यूटरों की क्षमता वाले सेलो और इंटरनेट सुविधायुक्त एकीकृत कम्प्यूटर लैब विकसित किए गए हैं।
- चिलचिलाती धूप व कड़ाके की सर्दी से बचाव के लिए बैरकों में फॉल्स सीलिंग लगवाए गए हैं।
- महिला मनोरंजन कक्ष को आधुनिक जिम, टीटी सुविधाओं इत्यादि से सुसज्जित करके विकसित किया गया है।
- परिसर में हरित क्रांति अभियान के अंतर्गत सोलर स्ट्रीट लाइटिंग एवं वृहद वृक्षारोपण किया गया।
- हाल ही में एक बेहतर टेनिस क्ले कोर्ट बनाया गया है।
- हाई मास्ट लाइट से सुसज्जित बालीबॉल व बास्केटबॉल कोर्ट बनाए गए हैं।



प्रशिक्षुओं एवं स्टाफ के लिए सुसज्जित फिजियोथैरेपी केंद्र बनाया गया है।

हम मानवीय उत्कृष्टता और व्यावसायिकता के उच्च स्तर के साथ कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए बल के कार्मिकों के संतोष और प्रदर्शन स्तर में दृश्यमान बदलाव लाने के लिए कृत संकल्प हैं। महिला प्रशिक्षणार्थियों के लिए अलग बैरक और मनोरंजन कक्ष बनाया गया है। ग्लोबल वार्मिंग से बचने के लिए परिसर में 50,000 पौधे लगाए गए हैं। स्वयं सहायता के आधार पर दूधिया रोशनी युक्त क्ले कोर्ट लॉन टेनिस का निर्माण किया गया है। वालीबॉल तथा क्रिकेट मैदान का निर्माण स्व-सहायता आधार पर तैयार किए गए हैं।



एन.सी.सी. ओ.टी.ए., ग्वालियर

में दिनांक 22 जुलाई से 19 अक्टूबर 2019 तक

90 दिवसीय प्री-कमीशन कोर्स का संचालन

राष्ट्रीय कैडेट कोर विश्वविद्यालय में सबसे बड़ा स्वैच्छिक युवा बल है जिसमें 15 लाख से भी अधिक कैडेट्स हैं। कई अन्य राष्ट्रों ने एन.सी.सी. से प्रेरित होकर समानान्तर संगठन बनाने में बराबरी की है तथा एन.सी.सी. में कैडेट एक्सचेंज प्रोग्राम के लिए नियमित कैडेट्स की उपस्थिति दी है। एन.सी.सी. जैसे विशाल तथा अद्वितीय संगठन को सुचारू एवं प्रभावी ढंग से चलाना, एक चुनौती भरा काम होता है जिसे सेना के नियमित सदस्य तथा एन.सी.सी. अफसर मिल कर अंजाम देते हैं।

अफसर प्रशिक्षण अकादमी, ग्वालियर सम्पूर्ण देश में एकमात्र ऐसा संस्थान है जो महिला अफसर, सहायक एन.सी.सी. अफसर तथा बालिका कैडेट्स अनुदेशक को प्रशिक्षित करती है। इस अकादमी में दिये गए प्रशिक्षण का उद्देश्य एन.सी.सी. अफसर को वे आवश्यक कुशलताएं प्रदान करना है जिनके द्वारा वे एन.सी.सी. कैडेट्स को राष्ट्र के जिम्मेदार, अनुशासित तथा कुशल नागरिक बना सकें।

एन.सी.सी. ओ.टी.ए., ग्वालियर में दिनांक 22 जुलाई 2019 से प्री-कमीशन कोर्स प्रारम्भ हुआ जिसमें सम्पूर्ण देश के विभिन्न निदेशालयों से लगभग 100 सीनियर विंग एवं जूनियर विंग की महिलाओं ने तीन माह के कड़े प्रशिक्षण को पूर्ण किया, जिसमें उन्हें शारीरिक प्रशिक्षण, ड्रिल, मैप रीडिंग, आउटडोर अभ्यास, हथियारों का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इन पाठ्यक्रम गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य क्रियाकलापों में व्यक्तित्व विकास कैपसूल तथा इनमें एकता व अनुशासन की भावना जागृत करने के लिये सांस्कृतिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय एकीकरण जागरूकता कार्यक्रम भी चलाए गए।

तीन माह के कोर्स की समाप्ति पर कोर्स को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के पश्चात् दीक्षांत परेड में समस्त प्रशिक्षणार्थियों को कमीशन प्रदान किया गया। कोर्स में श्रेष्ठ प्रशिक्षार्थियों तथा अन्य गतिविधियों में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किये गए।

कोर्स के दौरान निम्नलिखित मुख्य गतिविधियां संचालित की गई :-

एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों ने प्रदर्शित की - भारतीय सांस्कृतिक धरोहर

भारत में विभिन्न संस्कृतियां होते हुए भी हमारी प्राचीन सभ्यता हम सभी को एकता के रूप में बांधे हुए है। राष्ट्रीय कैडेट कोर विश्व की एक प्रधान वर्दीधारी युवा संगठन है जो अपने आदर्श 'एकता एवं अनुशासन' द्वारा देश की विविधताओं को एकता की ओर अग्रसर करता है। एन.सी.सी. संगठन को अनुशासन, उनके प्रशिक्षण द्वारा तथा एकता, सांस्कृतिक एकीकरण द्वारा प्राप्त होती है।

एन.सी.सी. ओ.टी.ए., ग्वालियर में प्रशिक्षण प्राप्त करने आए प्रशिक्षणार्थी भारत के प्रत्येक राज्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, ऐसे में ओटीए, ग्वालियर एक लघु भारत का रूप ले लेता है।

दिनांक 06 सितम्बर 2019 को एन.सी.सी. अफसर प्रशिक्षण अकादमी में सांस्कृतिक संध्या राष्ट्रीय एकीकरण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ओ.टी.ए. के उप कमांडेंट, कर्नल करनैल सिंह थे।

राष्ट्रीय एकीकरण जागरूकता कार्यक्रम की संध्या का प्रारंभ चयनित राज्यों की भौगोलिक, ऐतिहासिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्वरूपों को दर्शाते हुए कार्यक्रम की प्रस्तुति द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम की संध्या के शीर्षक के रूप में दो राज्यों उत्तर पूर्वी राज्य तथा



कर्नाटक एवं गोआ का चयन किया गया। देश के कोने-कोने से आई प्रशिक्षणार्थियों ने उत्तर पूर्वी राज्य तथा कर्नाटक एवं गोआ राज्यों की सम्पन्न संस्कृति को मनोरंजक तथा शैक्षणिक स्वरूप में प्रस्तुत कर मंच को जीवंत कर दिया।

इस संध्या का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से किया गया। कार्यक्रम के अगले चरण में उत्तर पूर्वी राज्य की प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बिहु, छेरो, नागा एवं थोमुर नृत्य प्रस्तुत किये गये। इसके साथ ही उन्होंने ब्रह्मपुत्र नृत्य तथा विभिन्न शैलियों द्वारा ब्रह्मपुत्र उत्सव को प्रदर्शित किया। इसके पश्चात कर्नाटक एवं गोआ की प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कुंभी मान्डो लोक नृत्य, कोडगु नृत्य, सुग्गी नृत्य, गोआ उत्सव और समूह गान प्रस्तुत किया गया।

एन.सी.सी. ओ.टी.ए. ग्वालियर में कनिष्ठ वर्ग नेवल एन.सी.सी. अफसर द्वारा प्री-कमीशन कोर्स का सफलतापूर्वक समापन

राष्ट्रीय कैडेट कोर, अफसर प्रशिक्षण अकादमी, ग्वालियर के ऐतिहासिक तथा मनमोहक वातावरण में नेवल एन.सी.सी. विंग की कनिष्ठ वर्ग महिला एएनओज् ने नेवल प्री-कमीशन कोर्स सफलतापूर्वक पूर्ण किया। यह छः सप्ताह का कोर्स, 22 जुलाई 2019 को प्रारंभ हुआ। एएनओज् नेवल एन.सी.सी. यूनिट्स तथा विभिन्न विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के बीच की आवश्यक कड़ी होती है।

इस अद्भुत समापन समारोह में चीफ कोर्स अफसर कैप्टन (भारतीय नौसेना) टी शिवाशंकर ने प्रशिक्षणार्थियों के लिये आयोजित की गई विभिन्न गतिविधियों के लिये समस्त स्टाफ को बधाइयां दीं। कोर्स में सम्मिलित पाठ्यक्रम में एन.सी.सी. संरचना, ड्रिल, वेपन ट्रेनिंग, नेवल ओरिएंटेशन, फायर फायटिंग एवं एनबीसीडी, नेवीगेशन एवं डायरेक्शन, नेवल कम्यूनिकेशन, सीमेनशिप, नेवल वारफेयर एवं उसके घटक, शिप मॉडलिंग आदि शामिल थे। प्रशिक्षणार्थियों को जल गतिविधियों, सीमेनशिप, शिप मॉडलिंग यूनिट तथा यूनिट कार्य से अवगत कराने के लिए 3 एम पी नेवल यूनिट, ग्वालियर तथा तिघरा ले जाया गया। प्रशिक्षणार्थियों को शिप मॉडलिंग का अनुभव प्रदान किया गया। वास्तविक भारतीय नौसेना को नजदीक से जानने एवं समझने के लिये इन्हें नेवल डौक, मुंबई ले जाया गया जहाँ नेवल प्रशिक्षणार्थी युद्धपोत, पनडुब्बियों तथा लड़ाकू जहाजों से रूबरू हो पाई। सभी प्रशिक्षणार्थियों को फायरिंग का अभ्यास करवाया गया। प्रशिक्षणार्थियों की दिनचर्या बहुत ही व्यस्त होती थी, जिसमें उनका दिन प्रातः 05.30 बजे प्रारंभ होता था और रात्रि 10.00 बजे समाप्त होता था। जीवन कौशल, योगा तथा प्रबंधन कौशल पर लेक्चर प्रदान करने के लिये समय-समय पर अतिथि वक्ता को भी आमंत्रित किया गया। कमांडेंट महोदय ब्रिगेडियर तपन लाल साह ने प्रशिक्षार्थियों को उनके कोर्स को सफलतापूर्वक पूरा करने पर बधाईयां दीं तथा अपने काम को समर्पण के साथ करने के लिये तथा एन.सी.सी. कैडेट को राष्ट्र के जिम्मेदार नागरिक तथा भावी नेता के रूप में अपने कर्तव्यों की पूर्ति करने के लिये प्रेरित करने का आह्वान किया।

कमांडेंट महोदय ने श्रेष्ठतम प्रशिक्षणार्थी को विभिन्न पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किये। जूनियर विंग नेवल एन.सी.सी. में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिये कमांडेंट का स्वर्ण पदक कर्नाटक एवं गोआ निदेशालय की थर्ड अफसर क्रिस्टा कारडोसो को प्रदान किया गया।

एन.सी.सी. प्रशिक्षार्थियों ने प्रदर्शित की- भारतीय सांस्कृतिक धरोहर 'मल्हार'

अफसर प्रशिक्षण अकादमी (ओटीए), ग्वालियर सम्पूर्ण देश में एकमात्र ऐसा प्रशिक्षण संस्थान है, जहाँ पर विभिन्न प्रांतों से आई एसोसिएट एन.सी.सी. अफसरों (एएनओज्) को प्रशिक्षित किया जाता है, जिसके द्वारा वे एन.सी.सी. की कैडेट को राष्ट्र के जिम्मेदार नागरिक व भावी नेता बनाने में सहायक होते हैं।

दिनांक 12 अक्टूबर 2019 को एन.सी.सी. अफसर प्रशिक्षण अकादमी में सांस्कृतिक संध्या 'मल्हार' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ओटीए के कमांडेंट, ब्रिगेडियर तपन लाल साह थे।

सांस्कृतिक संध्या 'मल्हार' का प्रारंभ भारत के राज्यों के सांस्कृतिक स्वरूपों को दर्शाते हुए कार्यक्रम प्रस्तुति द्वारा किया गया। देश



के कोने-कोने से आई प्रशिक्षणार्थियों ने राज्यों की सम्पन्न संस्कृति को मनोरंजक तथा शैक्षणिक माध्यम से प्रस्तुत करके मंच को जीवंत कर दिया।

इस संध्या का शुभारंभ अभिवादन तथा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। कार्यक्रम के अगले चरण में गणपति वंदना, केरल, आसाम, महाराष्ट्र, लद्दाख राज्य के लोक नृत्य, तमिलनाडु का गरकम नृत्य, उत्तराखंड राज्य की रजतयात्रा का प्रदर्शन तथा महिला सशक्तिकरण दर्शाते हुए एक नृत्य नाटिका, पंजाबी गिद्दा तथा विभिन्न समूह गान प्रस्तुत किये गये।

दीक्षांत परेड

दिनांक 19 अक्टूबर को रा.कै. कोर, अफसर प्रशिक्षण अकादमी, ग्वालियर के ऐतिहासिक तथा गौरवशाली परिसर में 53 वरिष्ठ वर्ग महिला एएनओज, 79 कनिष्ठ वर्ग महिला एएनओज तथा 05 नेवल वरिष्ठ वर्ग महिला एएनओज को भव्य दीक्षांत परेड में रैंक प्रदान किये गये। एएनओज, सैन्य संस्थान तथा विभिन्न विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के बीच की आवश्यक कड़ी होती है। इस अकादमी में भारत के विभिन्न राज्यों से आई कुल 137 प्रशिक्षार्थियों ने तीन महीनों का कोर्स सफलतापूर्वक पूरा किया, जिसमें विभिन्न प्रकार के सेना प्रशिक्षण जिसमें बेसिक सैन्य प्रशिक्षण, व्यक्तित्व विकास, उपदेशक कौशल तथा एन.सी.सी. विषय का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

ब्रिगेडियर तपन लाल साह, कमांडेंट एन.सी.सी. ओ.टी.ए., ग्वालियर ने इस शुभ अवसर पर दीक्षांत परेड की समीक्षा की। बड़ी संख्या में यहाँ पर पधारे प्रशिक्षार्थियों के रिश्तेदार भी इस परेड के साक्षी बने। अपने आनुष्ठानिक साजसज्जा से परिपूर्ण प्रशिक्षणार्थियों ने प्रभावशाली रूप से निरीक्षक महोदय के समक्ष गार्ड ऑफ ऑनर प्रस्तुत किया। कमांडेंट महोदय ने प्रशिक्षणार्थियों को उनके कमीशन प्राप्त करने पर बधाईयाँ दीं तथा अपने काम को समर्पण के साथ करने के लिये तथा राष्ट्र के युवा तथा भावी नेता के रूप में अपने कर्तव्यों की पूर्ति करने के लिये प्रोत्साहित किया।

प्रशिक्षणार्थियों को प्रदान किये गए पुरस्कार निम्न प्रकार हैं :-

(क) चैम्पियनशिप बैनर 'अल्फा' कंपनी को प्रदान किया गया।

(ख) दीक्षांत परेड को कमांड करने के लिये कमांडेंट का स्वर्ण पदक गुजरात निदेशालय की राधिका रामजी केराई को प्रदान किया गया।

(ग) कनिष्ठ स्कन्ध की मेरिट क्रम में प्रथम होने पर एन.सी.सी. महानिदेशक का प्लेक ऑफ ऑनर एवं कमांडेंट का स्वर्ण पदक तथा शिक्षाविदों में सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी के लिये शर्मा कप उत्तराखंड निदेशालय की नेहा ओझा को प्रदान किया गया।

(घ) वरिष्ठ स्कन्ध की मेरिट क्रम में प्रथम होने पर एन.सी.सी. महानिदेशक का प्लेक ऑफ ऑनर एवं कमांडेंट का स्वर्ण पदक तथा कोर्स में सर्वश्रेष्ठ एएनओ होने के लिये एन.सी.सी. महानिदेशक ट्रॉफी देहली निदेशालय की राखी थरेजा को प्रदान किया गया।

दीक्षांत परेड में एन.सी.सी. ओ.टी.ए. ग्वालियर के कमांडेंट ब्रिगेडियर टी.एल. साह के साथ ग्वालियर स्टेशन कमांडर ब्रिगेडियर विक्रम सिंह यादव तथा मिलिट्री हॉस्पिटल के कमांडर ब्रिगेडियर सरविंदर सिंह भी उपस्थित थे।



गैर संचारी रोगों के निवारण हेतु आयुर्वेद

डॉ. एस.बी. सिंह, अनुसंधान अधिकारी (आयु.),

क्षेत्रीय आयुर्वेदीय औषधि विकास अनुसंधान संस्थान, आमखो, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

जैसे-जैसे मानव सभ्यता ने विकास किया, विभिन्न तकनीक खोजी वैसे-वैसे मनुष्य इन तकनीकी संसाधनों पर निर्भर होता गया। पिछले कुछ वर्षों में विज्ञान एवं चिकित्सा के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुए जिसमें कि संक्रमण जन्य व्याधियों पर रोकथाम लगी, किंतु मनुष्य की बदलती जीवनशैली, आहार-विहार के परिवर्तन के साथ भारत देश के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व में गैर संचारी रोग (नॉन कम्युनिकेबल डिजीज) बहुत ही तेजी से उत्पन्न हुए एवं इसमें लगातार वृद्धि हो रही है। गैर संचारी रोग जैसे कि हृदय रोग, टाईप 2 डायबिटीज, अनेक प्रकार के मानस रोग, कैंसर, श्वास संबंधित अनेक बीमारियां, ये सब समय से पहले मृत्यु दर का कारण हैं। वर्ष 2016 के आंकड़ों के अनुसार विश्व भर में हुई कुल मौतों में 71 प्रतिशत गैर संचारी रोगों के कारण हुई है। इनमें सबसे ज्यादा मृत्यु हृदय रोग के कारण, फिर कैंसर के कारण, उसके बाद श्वास संबंधी रोगों एवं फिर डायबिटीज के कारण हुई है। ये सब आंकड़े हैं जिनमें लगातार वृद्धि हो रही है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान इन रोगों की रोकथाम में विफल रहा है तथा रोगी को सिर्फ लक्षणात्मक आराम दे पाने में ही सफल रहा है, क्योंकि यह सब जीवनशैली में परिवर्तन के कारण उत्पन्न हुए है ऐसे में इन रोगों की रोकथाम व उपचार हेतु जीवनशैली में सुधार ही एकमात्र उपाय है और जीवनशैली या आहार-विहार के संदर्भ में आयुर्वेद से अधिक वैज्ञानिक वर्णन एवं विवरण विश्व के किसी ग्रंथ में प्राप्त नहीं होता है। आयुर्वेद हजारों वर्ष पुरानी भारतीय चिकित्सा पद्धति है जिसका प्रयोग भारतीय समाज वर्षों से रोगों से मुक्त होने के लिये करता आ रहा है। आयुर्वेद मूलतः स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य के रक्षण पर जोर देता है साथ ही साथ रोगों के निवारण हेतु भी आयुर्वेद शास्त्र में असंख्य औषधियों व सिद्धांतों का विवरण प्राप्त होता है।

आयुर्वेद में न सिर्फ शरीर को स्वस्थ रखने के निर्देश हैं अपितु मन को स्वस्थ रखने के लिए भी बहुत ही वैज्ञानिक वर्णन किया गया है। आयुर्वेद का मूल सिद्धांत त्रिदोषवाद है जिसके अनुसार हमारे सम्पूर्ण शरीर की सभी गतिविधियां वात, पित्त एवं कफ के सम्यक समन्वित कार्यप्रणाली से होती है तथा इनका मनुष्य की प्रकृति के अनुसार प्राकृत व साम्य अवस्था में रहना मनुष्य को निरोग बनाए रखता है। किसी भी प्रकार का कोई कारक जो इन त्रिदोष की साम्यवस्था को भंग करता है तो ये विकृत होकर रोग उत्पन्न करते हैं। काल व प्रकृति का इन पर प्रभाव पड़ता है, लेकिन ये मुख्यतः हमारे मिथ्या आहार-विहार के कारण प्रकोपित होकर विभिन्न रोगों की उत्पत्ति का कारण बनते हैं।

विभिन्न शोधों से यह बात सामने आ रही है कि सभी गैर संचारी रोगों के कारण या जोखिम कारक एक जैसे ही हैं जैसे कि मोटापा, लंबे समय तक बैठे रहना, अस्वास्थ्यकर जीवनशैली, व्यायाम न करना, अहितकारी आहार व विहार, मादक पेय व धूम्रपान का सेवन आदि। ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज स्टडी के अनुसार अधिक मोटापा व कुपोषण ही गैर संचारी रोगों के बढ़ने का मुख्य कारण है। आयुर्वेद में इनका संतर्पण जन्य व अपतर्पण जन्य व्याधियों के रूप में बहुत समय पूर्व ही वर्णन कर दिया गया है तथा इनकी चिकित्सा का भी वर्णन किया गया है। आहार व विहार के नियमों को लेकर आयुर्वेद में बहुत ही वैज्ञानिक वर्णन तथा सिद्धांत प्राप्त होते हैं जो कि इन गैर संचारी रोगों की रोकथाम में काफी सहायक सिद्ध होते हैं। आयुर्वेद के ग्रंथों में स्थान-स्थान पर संतर्पण जन्य रोगों के कारणों का वर्णन मिलता है जिनमें नये अनाज का सेवन, अत्यधिक मीठा, पचने में भारी भोजन का सेवन, दूध व दूध के उत्पाद, चीनी व गुड़ से बने उत्पाद आदि का अधिक सेवन, भूख न लगने पर खाना, बार-बार खाना, अत्यधिक सोना, दिन में सोना व खाने के तुरन्त बाद सोना,



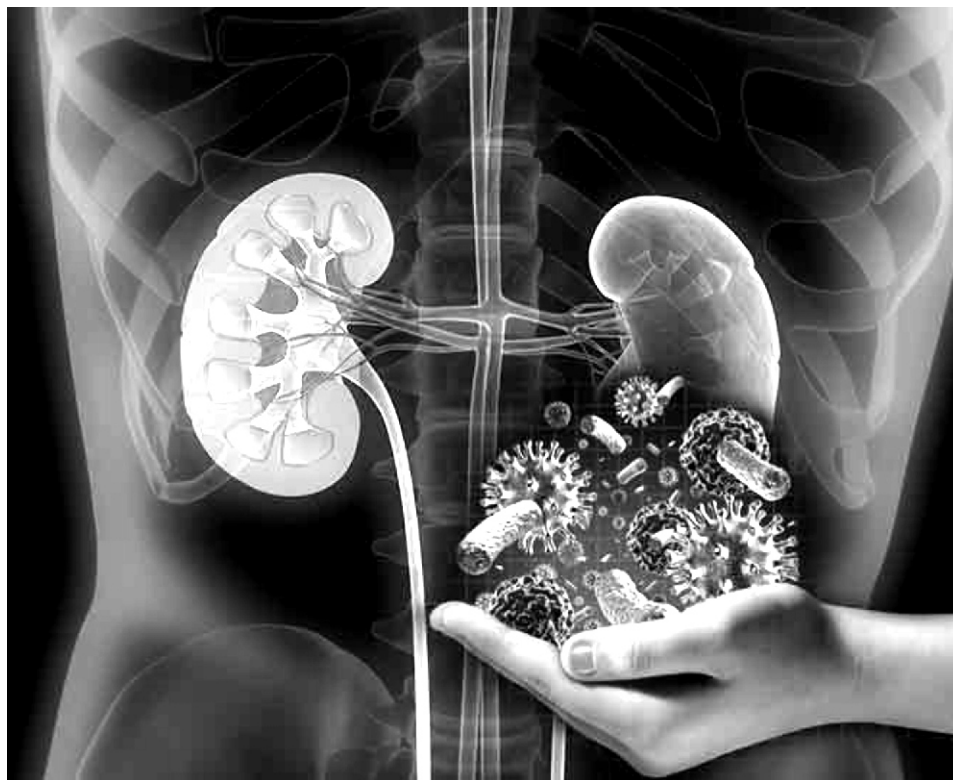
शारीरिक व मानसिक व्यायाम न करना, मद्य का सेवन करना आदि प्रमुख हैं। ये सब हृदय रोग व टाईप 2 डायबिटीज को उत्पन्न करते हैं। आयुर्वेद में इस प्रकार का आहार-विहार करना निन्दनीय व रोगोत्पादक बताया है। किसी भी प्रकार के रोग से बचने हेतु आयुर्वेद संयमित जीवनशैली की अनुशंसा करता है। इस हेतु आयुर्वेद में मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने हेतु सम्यक् आहार-विहार, उपयुक्त दिनचर्या व ऋतुचर्या का अनुपालन करने के निर्देश दिये गये हैं। संक्षिप्त में कहा जाये तो गैर संचारी रोगों से बचाव के लिए -

- अपने आहार को संतुलित व नियमित करें। आहार में फल व सब्जी की उपयुक्त मात्रा लें, बार-बार खाने की आदत का त्याग कर द्विकाल भोजन की आदत डालें।

- व्यायाम को अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाएं। सप्ताह में कम से कम 150 मिनट व्यायाम के लिए अवश्य निकालें। व्यायाम के साथ-साथ योग व प्राणायाम को भी अपनी दिनचर्या में सम्मिलित करें। एक ही स्थान पर एक घंटे से अधिक बैठने से बचें।

- सम्यक नींद का सेवन करें। 7-8 घंटे से अधिक की नींद न लें और दिन में एवं भोजन के तुरन्त बाद सोने की आदत न डालें।

- सद्वृत्त का अनुपालन करें। अच्छा सोचे, अच्छा करें, ईर्ष्या, लोभ, क्रोध, द्वेष, मोह आदि भावनाओं को मन में न आने दें। सत्त्व पर विजय प्राप्त करने हेतु दान, पूजा, उपवास आदि कार्यों को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं।





आधुनिक तकनीकी का प्रतीक - रेल स्प्रिंग कारखाना सिथौली, ग्वालियर

मनोज कुमार, मुख्य कारखाना प्रबंधक

रेल स्प्रिंग कारखाना, सिथौली

रेल स्प्रिंग कारखाना, उत्तर मध्य रेलवे के अंतर्गत ग्वालियर से 12 कि.मी. दूर सिथौली रेलवे स्टेशन के पास स्थित है। स्प्रिंग उत्पादन के क्षेत्र में इस कारखाने का भारतीय रेल के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

पूर्व में स्प्रिंग उत्पादन के क्षेत्र में अपनाई गई प्रणाली से आवश्यकतानुसार उच्च गुणवत्ता की स्प्रिंगों का उत्पादन नहीं हो पाता था। बदलते परिवेश में कुछ समय पश्चात हमें एक व्यवस्थित व्यवस्था की आवश्यकता पड़ी, जिससे हम अच्छी स्प्रिंग से गाड़ी को ले जा सकें, और रेलयात्रियों को अधिक सुरक्षित व आरामदायक यात्रा करा सकें, अर्थात् हमें एक विश्वसनीय प्रणाली की आवश्यकता पड़ी।

जनसंख्या तथा औद्योगीकरण को ध्यान में रखते हुए हमें इस तरह की स्प्रिंग की आवश्यकता थी, जो सवारी गाड़ी के डिब्बों (कोच) को सुरक्षित व अधिक गति से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचा सकें। इसके लिए आवश्यक था कि त्रुटिहीन स्प्रिंगों का निर्माण करें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारतीय रेलवे द्वारा रेल स्प्रिंग कारखाने को विभिन्न प्रकार के रोलिंग स्टॉक पर उपयोग के लिए हॉट कॉइल हेलिकन स्प्रिंग के निर्माण के लिए डिजाइन किया गया है। यह कारखाना भारतीय रेलवे का आधुनिक तकनीकी से सज्जित कारखाना है।

इस कारखाने का निर्माण वर्ष 1889 में मैसर्स अर्नस्ट कोम्प्रोव्स्की एंड कंपनी जर्मनी (Ernst Komroski & Co. Germany) द्वारा एक अग्रणी स्प्रिंग निर्माता मैसर्स ग्रुबर के साथ तकनीकी सहयोग में सेटअप पर आधारित (Gruber Germany) तकनीकी सहयोग से किया गया। यह कारखाना सर्वोच्चतम तकनीकी हेलिकल स्प्रिंगों के उत्पादन हेतु प्रतिबद्ध है। यहां की सभी मशीनें CNC एवं NC मशीनें हैं तथा कारखाने की सभी फर्नेस एलपीसी से संचालित हैं। इस कारखाने में वर्ष 1990 से स्प्रिंग का उत्पादन शुरू हुआ। इसी वर्ष 1990 में ही कारखाने का औपचारिक उद्घाटन किया गया था। कारखाने के पहले प्रभारी, मुख्य परियोजना प्रबंधक के रूप में श्री एस वेंकटरमन थे, बाद में जिन्हें मुख्य कारखाना प्रबंधक, रेल स्प्रिंग कारखाना सिथौली के रूप में संचालित किया गया था।

वर्ष 2011 में फिएट क्वायलिंग के लिए इस कारखाने का आधुनिकीकरण किया गया। इन मशीनों द्वारा राजधानी एवं शताब्दी एक्सप्रेस में लगने वाली फिएट स्प्रिंगों को प्रायोगिक तौर पर बनाया गया तथा आरडीएसओ से स्प्रिंगों के परीक्षण में पास होने के पश्चात, इन स्प्रिंगों को बनाया जा रहा है। वर्ष 2012-13 में F02, F03, F04, F06, F18 एवं F19 को बनाने की विधि विकसित कर ली गयी है, जिससे इन स्प्रिंगों को भविष्य में आवश्यकतानुसार बनाया जा सके। पहले इन स्प्रिंगों को जर्मनी से आयात किया जाता था, अब रेल स्प्रिंग कारखाना सिथौली पर ही बनायी जाती हैं।

स्प्रिंग का मटेरियल - जर्मन विशेषज्ञों के अनुसार मानक EN-10089 या ISO-643 भाग 14 के अंतर्गत स्प्रिंग निर्माण हेतु सुझाए गए मटेरियल में से 52Cn MoV4 को रेल स्प्रिंग कारखाना चुना गया है जिसकी रासायनिक संरचना निम्न है।

कार्बन - 0.48-0.56 सिलिकॉन - 0.15-0.40 मैंगनीज - 0.70-1.0 क्रोमियम - 0.90 - 1.20

मोलिब्डेन - 0.15 - 0.25 वेनेडियम - 0.07 - 0.20 सल्फर - 0.15 फॉस्फोरस - 0.1

स्प्रिंग की उत्पादन प्रक्रिया -

1. भौतिक परीक्षण - सतह का निरीक्षण, नग्न आंखों से सतह पर किसी भी प्रकार की खरोंच, गड्ढे, दरार आदि न दिखाई दें।



सतह की जांच खुरदरेपन हेतु करें, ताकि Ra-मान 5 व उससे रहें। बार की लंबाई व व्यास की माप की जाती है, जो निर्धारित छल्लों के निर्माण हेतु अनुरूप हो।

स्प्रिंग के दोनों सिरों की बनावट के लिए बार को फर्नेस में 950 ± 10 डिग्री सेन्टीग्रेड पर गर्म कर डाई से सिरों को दबाकर उसमें 270 डिग्री सेन्टीग्रेड के अनुरूप टेपर में परिवर्तित करते हैं। फिर उसमें पंच द्वारा पंच कोड से चिह्नित करते हैं, जिसमें उत्पादक का नाम, मैटेरियल कोड, निर्माण वर्ष, माह, निर्माण हीट संख्या शामिल हों तथा तीन चौथाई स्प्रिंग के व्यास के बराबर आधार निर्मित हो सके।

बार हीटिंग/क्वालिंग – स्प्रिंग स्टील पर बार को 920 डिग्री सेन्टीग्रेड ± 10 डिग्री सेन्टीग्रेड तक गर्म करते हैं। गर्म की हुई बार (रॉड) को अतिशीघ्र छल्ले के रूप में घुमावदार कमानी में बदलने हेतु स्वचालित मेंड्रल का उपयोग करते हैं। इसके बाद शीघ्र ही क्वेंचिंग ऑयल में डुबोकर उसमें कठोरता का गुण पैदा करने हेतु तापमान 830 से 850 डिग्री सेन्टीग्रेड तक बनाए रखना आवश्यक होता है।

टेम्परिंग – स्प्रिंग को ट्रॉसफोरमेशन रेंज के नीचे ठंडा करते हैं। जिससे मार्टेनसाइट की संरचना टैंपर्ड मार्टेनसाइट में बदल जाती है। इसमें कार्बन का पृथक्करण मार्टेनसाइट लैटिस से होने पर स्ट्रेस में कमी आती है जो 250 से 300 डिग्री सेन्टीग्रेड पर इलास्टिक स्ट्रेस दूर किया जाता है।

मेटलर्जिकल परीक्षण – प्रथम स्तर – निर्मित की गयी स्प्रिंगों में से आंतरिक संरचना की जांच हेतु क्वेंचिंग के तुरंत बाद निकालकर नमूना काटने के बाद ग्राइंडिंग कर पॉलिश व ईचिंग की जाती है, फिर ऑप्टिकल माइक्रोस्कोप से संरचना की जांच करते हैं। इसके साथ-साथ क्वेंच कठोरता भी जांचते हैं, जो 550-650 बी.एच.एन. होना चाहिए।

द्वितीय स्तर – टेम्परिंग के बाद पुनः कठोरता की जांच की जाती है जिसे 420-510 बी.एच.एन. होना चाहिए।

तृतीय स्तर – इसके अंतर्गत माइक्रो नमूने में सतह से (केन्द्र) कोर तक की कठोरता जांचते हैं, जिसमें 30 बी.एच.एन. से अधिक न हों।

एंड ग्राइंडिंग – स्प्रिंग के दोनों सिरों से ग्राइंडिंग मशीन से घिसाव द्वारा आधार के समतल को एक रूप बनाते हैं जो स्प्रिंग के तीन चौथाई परिधि के बराबर (75 प्रतिशत) घिसा हो तथा सतह पर जले हुए चिन्ह न हों।

शॉट पीनिंग – यह शीतलन प्रक्रिया है। इसमें 0.6 मिमी. से 1 मिमी. के व्यास के स्टील शॉट्स की बौछार करके सतह की ऊपरी पर्त को रेसीडुअल स्ट्रेस को कम करते हैं। जिससे फटिंग लाइफ में बढ़ोत्तरी होती है।

मैगनाफ्लश परीक्षण – स्प्रिंग की सतह के ऊपर उत्पन्न दरारों (क्रैक्स) की पहचान के लिए इस मशीन द्वारा शत प्रतिशत स्प्रिंगों का परीक्षण किया जाता है। जिससे वे सेवा के दौरान विफल न हो सके। लैब द्वारा इसमें प्रयुक्त मैगनाफ्लश तरल द्रव में चुंबकीय कणों की सुदृढ़ता तथा अल्ट्रावायलट प्रकाश की तीव्रता की जांच पाई स्टेन्डर्ड गेज व कीटोज रिग से करते हैं।

स्क्रैगिंग मशीन – इस मशीन द्वारा स्प्रिंग के कार्य के दौरान किसी भी प्रकार के रिलेक्शन को कम करने हेतु किया जाता है। इसमें इन वाले लोड को नापते हैं। स्टीफनेस भी दो प्रकार से नापते हैं, जिसमें नेन्सकी लोड डिफ्लेक्शन टेस्ट मशीन से इसके वर्टिकल व लैटरल रिजीडिटी की परीक्षण करते हैं।

फॉस्फेटिंग संयंत्र – स्प्रिंग की सतह को वायुमंडलीय क्षरण तथा जंग इत्यादि से बचाव हेतु इस विधि से जिंक फॉस्फेट की कोटिंग 5 से 10 माइक्रोन तक चढ़ाई जाती है जो फाइन क्रिस्टलाइन होना चाहिए।

पेंटिंग – प्राइमर पेंट हेतु सिंथेटिक मेटल प्राइमर अल्काइड रेजिन बेस स्टोविंग गुणवत्ता का पेंट प्रयोग करते हैं। जो IS:2932 के अनुरूप हो। इसकी पर्त 30 माइक्रोन तक चढ़ाते हैं।



कोटिंग लेकरिंग - कोटिंग लेकरिंग की पर्त 40 माइक्रोन तक चढ़ाते हैं, जिसमें 8 प्रतिशत जिंक तथा 7.6 प्रतिशत PO₄ मिलाने हैं।

पैकिंग - तैयार की गयी स्प्रिंग को तीन से सात पर्तों वाली कोशुरेटेड विनाइल एसीटेअ कवर थैले में बंद करके बॉक्स में बंद करते हैं। जिसमें सप्लायर/निर्माता की पहचान, स्प्रिंग कोड आदि दर्शाया गया होता है।

स्प्रिंग बनाने की प्रक्रिया के दौरान निकलने वाले दूषित पानी से आसपास की वनस्पति एवं प्राणियों पर पड़ने वाले दूषित प्रभाव से बचाने के लिए कारखाना परिसर में ही एफ्लूएंट ट्रीटमेंट संयंत्र द्वारा पानी को साफ किया जाता है, एवं इस पानी को कारखाना परिसर में बागवानी के कार्य में लिया जाता है। कारखाने का स्वस्थ पर्यावरण बनाए रखने हेतु अनेक बगीचे तैयार किये गये हैं।

रेल स्प्रिंग कारखाना सिथौली को इस मुकाम पर लाने में यहां कार्य करने वाले सभी अधिकारियों-कर्मचारियों का विशेष योगदान रहा है। सिथौली कारखाना आज भारतीय रेल के लिये एक उत्कृष्ट कारखाने के रूप में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए है और आगे भी राष्ट्रसेवा के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है।



हिंदी की दशा और दिशा

डी.पी. पाठक, तक. सहायक 'बी'

डी.आर.डी.ई. ग्वालियर

अशासकीय क्षेत्र में हिंदी -

हिंदी का क्षेत्र व्यापक है। हिंदी सिर्फ इसीलिए ही व्यापक नहीं है कि वह ज्यादा लोगों के द्वारा बोली जाती है बल्कि हिंदी का साहित्य ज्यादा व्यापक है। उसकी जड़ें गहरी हैं। इसके मूल में हिंदी की बोलियाँ और उन बोलियों की उपबोलियाँ हैं जो अपने में एक बड़ी परंपरा, इतिहास और सभ्यता को समेटे हुए हैं वरन् स्वतंत्रता संग्राम, जनसंघर्ष और वर्तमान के बाजारवाद के खिलाफ भी उसकी रचना संसार सचेत है। आज हिंदी में काफी लिखा जा रहा है, बेहतर लिखा जा रहा है। कहानी में व्यापक फलक हैं, बारीकियाँ हैं। कविता में जबर्दस्त चेतना भाषा का प्रवाह, चट्टानों को आकार में बदलने की उद्दम छटपटाहट है।

निबंधों में नया विकास सामने आया है। उपन्यासों में नवीन इलाके, बंजर हो रही जमीन को उर्वर बनाने का रचनात्मक जोश साफ झलक रहा है। इस पूरे रचनाक्रम में पूरी भारतीय मनीषा की उपस्थिति है। हिंदी भाषा में आज कई संभावनाएं जन्म ले चुकी हैं इसकी समृद्धता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि हिंदी की तीस से ज्यादा बोलियाँ आज उत्तर तथा मध्य भारत के शहरों, गांवों, कस्बों में प्रचलित हैं। और तो और देश में देखे जाने वाले टी.वी. चैनल हिंदी के ही हैं। हिंदी का विस्तार इतना बड़ा है कि वैश्वीकरण की आवश्यकताओं व भारतीय संस्कृति की ओर दुनिया के रूझान के चलते आज अमेरिका, यूरोप के कई देशों में भी हिंदी एक ब्रांड बन चुकी है।

वर्तमान में हिंदी विश्व की सबसे अधिक प्रयोग में आने वाली भाषाओं में दूसरा स्थान रखती है। हो सकता है कि अंग्रेजी का प्रभाव प्रौढ़ हिंदी पर अधिक नजर आता हो, मगर इस हिंदी ने अपने भीतर इतनी भाषाओं और बोलियों को समेटकर अपनी गंभीरता का परिचय दिया है। हो सकता है कि भविष्य में हिंदी भी किसी अन्य 'अपभ्रंश' शिशु को जन्म दे, पर राष्ट्रभाषा का गौरव हर भारतीय में नैसर्गिक रूप से व्याप्त होगा।

शासकीय क्षेत्र में हिंदी -

दरअसल हम कहते हैं कि 'अंग्रेजी हटाओ', यह नहीं कहते हैं कि 'अंग्रेजी मिटाओ'। हमारी बात लोग गलत समझते हैं। हमारा यह तात्पर्य नहीं है कि अंग्रेजी को पूरी तरह खत्म कर दिया जाए, क्योंकि यह सच है कि यह हमें साम्राज्यवादियों से विरासत में मिली है। वैसे भी आज हिंदी को उचित सम्मान नहीं मिल पा रहा है।

अंग्रेजी के इस बढ़ते प्रचलन के कारण आज एक साधारण हिंदी भाषी नागरिक यह सोचने पर मजबूर है कि क्या हमारी पवित्र पुस्तकें जो हिंदी में हैं, वह भी अंग्रेजी में हो जाएंगी। हमारा राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान, हमारी पूजा-प्रार्थना सब अंग्रेजी में हो जाएंगे। हम गर्व से कहते हैं कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसे हम भारतवासियों को अपनाना चाहिए, लेकिन आजकल की पीढ़ी जब भी अपना मुँह खोलती है तो सिर्फ और सिर्फ अंग्रेजी ही बोलती है। क्या इस प्रकार के रवैये से हमारी यह उम्मीद है कि 'हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाना' कभी संभव हो पाएगा।

हिंदी भाषा विविधता का एक ऐसा स्वरूप है जिसने वर्तमान में अपनी व्यापकता में कितनी ही बोलियों और भाषाओं को संजोया है। जिस तरह हमारी सभ्यता ने हजारों सावन और हजारों पतझड़ देखे हैं, ठीक उसी तरह हिंदी भी उस शिशु के समान हैं, जिसने अपनी



माता के गर्भ में ही हर तरह के मौसम देखने शुरू कर दिए थे। हिंदी की माता थी संस्कृत भाषा, जिसके अति क्लिष्ट स्वरूप और अरबी, फारसी जैसी विदेशी और पाली, पाकृत जैसी देशी भाषाओं के मिश्रण ने हिंदी को अस्तित्व प्रदान किया। जिस शिशु को इतनी सारी भाषाएँ अपने प्रेम से सींचे, उसके गठन की मजबूती का अंदाज लगाना बहुत मुश्किल है।

यदि हिंदी का प्रयोग बढ़ाना है और हिंदी को सही मायने में अपनाना है तो इसे खुली छूट देनी होगी। हिंदी के सारे नियम कानून जगजाहिर करने होंगे। सारे उच्च स्तरीय अधिकारियों को जन समुदाय को प्रोत्साहित करने के लिए, मजबूरन ही सही अपने बच्चों को हिंदी माध्यम स्कूलों में पढ़ाना होगा। अधिकारी इससे कतराते क्यों हैं, इसका राज, राज ही है... या उनकी समझ में भी अंग्रेजी ही शिखर की सीढ़ी है।

बात सही है। आज के परिप्रेक्ष्य में अंग्रेजी के माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त करना आसान है। इसका तात्पर्य यह तो नहीं कि लोग हिंदी से परहेज करें। लोग हिंदी सीखें इसलिए कि स्कूलों में हिंदी आवश्यक है और अंग्रेजी इसलिए सीखें कि उससे उच्च शिक्षा पाना आसान है और अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों एवं उद्योगों में प्रवेश पाना आसान है। यदि इस देश की हर शाला में हिंदी अनिवार्य कर दी जाए तो हिंदी आगे बढ़ सकती है। जैसे हम अंग्रेजी की अवहेलना नहीं कर सकते वैसे ही किसी को भी हिंदी की अवहेलना करने न दिया जाए, ऐसा करने पर ही अगले कुछ वर्षों में हम हिंदी को उस स्तर तक ला सकेंगे जहाँ देश ही में उच्च शिक्षा हिंदी में दी जा सकेगी और रोजगार के लिए कम से कम हमारे देश में अंग्रेजी जरूरी नहीं रह जाएगी।

50-55 साल के किसी बूढ़े को एक सप्ताह का प्रशिक्षण दे देने से, वह हिंदी में विद्वान नहीं हो जाता। इसके लिए आवश्यक है कि वह व्यक्ति इस भाषा से लगातार संपर्क में रहे। यह संभव तब ही हो सकता है जब भारत की सभी शालाओं में हिंदी अनिवार्य हो और इसमें 50 प्रतिशत अंक पाने पर ही उसे उत्तीर्ण घोषित किया जाए।

यदि सही मायने में हम हिंदी के उपासक हैं और हिंदी को पनपता देखना चाहते हैं तो सभी सार्वजनिक व सरकारी प्रतिष्ठानों में प्रवेश के लिए हिंदी अनिवार्य क्यों नहीं की जाती? ऐसा तो कोई कानून नहीं है कि हिंदी जानने वाला अंग्रेजी नहीं जान सकता। यदि किसी को ऐसा लगता है कि प्रगति के लिए अंग्रेजी जरूरी है तो वह अंग्रेजी सीखे और क्योंकि देश में पढ़ने के लिए हिंदी जरूरी है इसलिए हिंदी पढ़े। सवाल केवल इसी बात का है कि सरकार में ऐसे कदम उठाने की हिम्मत हो। देश की कितनी जनता अंग्रेजी के बल पर विदेश जाती है... कम से कम वे लोग जो इस देश में रहना, पढ़ना और नौकरी या व्यवसाय करना चाहते हैं - हिंदी के प्रति ध्यान दें। आज की युवा पीढ़ी किसी एक से बंध कर नहीं रह सकती चाहे वह भाषा ही क्यों न हो। हर क्षेत्र की तरह, वह भाषा के क्षेत्र में भी लचीलापन (फ्लेक्सिबिलिटी) चाहती है, जिसकी कसौटी पर अंग्रेजी खरी उतरती है।

मैं यदि मेरी कहूँ तो मुझे हिंदी से बेहद लगाव है। मेरा ऐसा मानना है कि हम आए दिन हिंदी को तहे दिल से रोजमर्रा में अपनाने का प्रण लेते रहते हैं, लेकिन इसे राजभाषा पखवाड़े तक ही सीमित रखना हमारी आदत बन गई है। राजभाषा तक सीमित हिंदी को अब असीमित करना होगा।

खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी बा की धार।

जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार ॥



स्वाइन फ्लू पर संक्षिप्त विवरण

राम गोविंद यादव, एस.टी.ए. 'बी'

डी.आर.डी.ई. ग्वालियर

परिचय

स्वाइन फ्लू मूलतः विषाणु जनित रोग है। इस रोग के विषाणु मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं, जो कि एन्फ्लूएंजा A, B, C है। जिसमें से केवल टाइप A एवं B मानव संक्रमण के लिए उत्तरदायी हैं। 2009 के बाद H₁N₁ विषाणु, जो इस रोग के कारक विषाणु स्ट्रेन में से एक है, एक वैश्विक महामारी के रूप में सामने आया।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मौजूदा H₁N₁ विषाणु की जड़, 1918 में हुए स्पेनिश फ्लू महामारी से जोड़ कर देखी जा सकती है। इसके बाद 1957 के 'एशियायी फ्लू (H₁N₂)', 1968 के 'हांग-कांग फ्लू' (H₁N₂) तथा 2004 के H₁N₁ विषाणु भी उसी क्रमिक उत्परिवर्तन का हिस्सा है, जिससे आज का H₁N₁ (2009) विषाणु सामने आया है।

मनुष्य, सूअर तथा पक्षियों में होने वाले तीनों एन्फ्लूएंजा पक्षियों को प्रभावित करते हैं। ऐसे में प्रवासी पक्षी विश्व भर में इन विषाणुओं के विभिन्न स्ट्रेन एकत्रित करते हैं व इन्हीं में इन विषाणुओं का उत्परिवर्तन एवं पुनर्संयोजन (reassortment) होता है। चीन की 'किनघाई झील' इन अनुवांशिक फेरबदलों का प्रमुख केन्द्र साबित हुई है।

विषाणु के गुण

H₁N₁ ऑर्थोमिक्सोविरिडी (orthomyxoviridae) कुल का एकल RNARNA विषाणु है। हीमग्लूटिनिन (H) एवं न्यूमिनिडेज (N) नामक दो प्रोटीन एवं उनमें आने वाले अंतर के आधार पर इस विषाणु का नामकरण किया जाता है। इन्हीं प्रतिजनों में लगातार होने वाले उत्परिवर्तन के कारण बीमारी के नए उपप्रकार बनते रहते हैं। इस प्रक्रिया को प्रतिजन ड्रिफ्ट कहते हैं। वहीं किसी बड़े पुनर्संयोजन के बाद नए स्ट्रेन बनने की प्रक्रिया को प्रतिजन शिफ्ट कहते हैं।

स्वाइन फ्लू के लक्षण

- तेज बुखार, गले में खराश, नाक बहना, जुकाम के साथ सांस लेने में परेशानी
- शरीर तथा मांसपेशियों में तेज दर्द
- गंभीर थकावट का अहसास
- स्थिति गंभीर होने वाले मरीज को लगातार उल्टियाँ तथा दस्त होते रहते हैं।

स्वाइन फ्लू का उपचार

उपचार हेतु टेमीफ्लू एवं रलेन्जा नामक दवाएं बीमारी के लक्षण दिखने के 1-2 दिन में दी जाती हैं। हालांकि कुछ विषाणु इनके प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर लेते हैं। साथ ही स्वाइन फ्लू के लिए टीका भी उपलब्ध है, जिसे हर वर्ष लिया जाना चाहिए।

स्वाइन फ्लू से बचाव

- साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें।
- छींक व खाँसी आने पर मुँह व नाक ढके तथा बाद में साबुन से हाथ धोएं।



- भीड़-भाड़ वाली जगहों से बचें।
- संक्रमित व्यक्तियों से हाथ न मिलाए।
- संक्रमित व्यक्ति के कपड़े, बर्तन आदि प्रयोग न करें।

जहाँ एक ओर वैश्विक स्तर पर स्वाइन फ्लू की रोकथाम के लिए प्रयास किए जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर यह विषाणु लगातार अपना स्वरूप बदल रहा है व दवाइयों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर रहा है। ऐसे में नई विषाणु रोधक तकनीकों की खोज में प्रयास किए जाते रहने की आवश्यकता है। साथ ही नई निदान तकनीकों पर भी काम करना अब एक जरूरत बन चुकी है। इन दोनों ही क्षेत्रों में विकास के लिए जरूरी है कि हम H₁N₁ विषाणु की अनुवांशिकीय शोध (Genomic) करते रहें और जब तक कोई सुदृढ़ समाधान नहीं मिल जाते, तब तक बचाव के पहलू पर ध्यान दें व आवश्यक जन चेतना जाग्रत करने का प्रयास करते रहें।





हिंदी गीत

जे.जे. श्रीवास्तव 'ज्योति'

पर्यवेक्षक - हिंदी कक्ष -2

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वितीय, म.प्र.

हिन्दुस्तान की भाषा हिंदी, भारत की यह शान
हिंदी से ही बनी विश्व में, भारत की पहचान।
हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान,
हिंदी से ही, हिन्दुस्तान।

काश्मीर से कन्याकुमारी, तक होती है पूजा
इसका नहीं विकल्प है कोई, दुनिया भर में दूजा।
हिंदी भाषा बना चुकी है, जगत में अपना नाम,
हिंदी से ही बनी विश्व में, भारत की पहचान।।
हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान,
हिंदी से ही, हिन्दुस्तान।

बना तिरंगा तीन रंग का, राष्ट्रगीत है शान,
हिंदी सीखो, हिंदी बोलो, चीन हो या जापान।
अपना लो हिंदी को, करके हिंदी में सब काम,
हिंदी से ही बनी विश्व में, भारत की पहचान।।
हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान,
हिंदी से ही हिन्दुस्तान।

हिंदी जन-जन की भाषा है, देश की है पहचान,
मेरे देश को मिला है जैसे, ईश्वर का वरदान।
सरल, सौम्य, वैज्ञानिक हिंदी का, कर लें सम्मान,
हिंदी से ही बनी विश्व में, भारत की पहचान।।
हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान,
हिंदी से ही हिन्दुस्तान।



दुनिया से भुखमरी व कुपोषण के उन्मूलन में आलू की भूमिका

डॉ. शिव प्रताप सिंह, डॉ. संजय कुमार शर्मा, श्याम कुमार गुप्ता,
डॉ. मुरलीधर जे. सदावर्ती, डॉ. सुभाष कटारे एवं डॉ. वाई.पी. सिंह

भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान - क्षेत्रीय केन्द्र, ग्वालियर - 474020, म.प्र.

आलू अनाजों के अतिरिक्त प्रमुख खाद्य है जो दुनिया के एक अरब से अधिक लोगों द्वारा उपभोग की जाती है। भारत में फसल विविधीकरण और खाद्य व पोषण सुरक्षा में आलू प्रमुख भूमिका निभा सकता है। आलू कार्बोहाइड्रेट से भरपूर व कम वसायुक्त बहुमुखी खाद्य है। आलू में उपलब्ध प्रोटीन की गुणवत्ता दूध की प्रोटीन के बराबर होती है। जिसमें एमीनो एसिड मानव आवश्यकता के अनुरूप होते हैं। भारत में प्रति व्यक्ति आलू का उपभोग विकसित देशों की तुलना में दसवें हिस्से के बराबर है।

मानव उपभोग की दृष्टि से आलू दुनिया में धान व गेहूं के बाद तीसरी प्रमुख फसल है। वर्तमान में विश्व में आलू का क्षेत्रफल 19.3 मिलियन हेक्टेयर, उत्पादन 388.19 मिलियन टन एवं उत्पादकता 20.11 टन/हेक्टेयर है। पूरी दुनिया में आलू प्रसंस्करण एवं निर्यात में नीदरलैंड अग्रणी देश है जिसकी उत्पादकता 46 टन/हेक्टेयर है।

हमारे देश में आलू का सब्जियों में 26 प्रतिशत का योगदान है और इसे सब्जियों का राजा माना जाता है। आलू की पोषण क्षमता, उत्पादकता, महत्व इत्यादि को देखते हुए अंतर्राष्ट्रीय कृषि एवं खाद्य संगठन ने वर्ष 2008 को 'अंतर्राष्ट्रीय आलू वर्ष' के रूप में मनाया था और आलू को भविष्य का खाद्य घोषित किया। वर्ष 2018-19 में भारत में आलू के अंतर्गत क्षेत्रफल 2.18 मिलियन हेक्टेयर, उत्पादन 52.59 मिलियन टन एवं उत्पादकता 24.08 टन/हेक्टेयर थी। इस लक्ष्य की पूर्ति में भा.कृ.अनु.प- केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित प्रजातियों एवं क्षेत्रवार उत्पादन तकनीकों के विकास का महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वारा उसके विभिन्न संस्थानों द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों के द्वारा देश को हुए योगदान के आंकलन में केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित आलू की प्रजातियों एवं विभिन्न तकनीकों का योगदान 57, 000 करोड़ आंका गया है जो कि भारत में किसी एक फसल व भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान परिषद के किसी एक संस्थान का सर्वाधिक योगदान है।

बिल गेट्स के मुताबिक भुखमरी व गरीबी के खिलाफ लड़ाई के लिए कृषि में निवेश सर्वोत्तम अस्त्र है। कृषि में विकास से अरबों लोगों की जिन्दगी में सुधार हुआ है।

हिमाचल प्रदेश में आलू उगाना ब्रिटिश कैप्टन मुन्डी ने 1828 में शुरू किया था। गैर-मौसमी (ऑफ सीजन) उत्पादन में हिमाचल के कांगड़ा क्षेत्र में प्रसंस्करण आलू को बढ़ावा दिया जा रहा है। देश में आलू की उत्पादकता गुजरात में 31 टन/हेक्टेयर के साथ सर्वाधिक है, जबकि कुल आलू उत्पादन में उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल व बिहार का क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान है।

भारत में आलू, फसल विविधीकरण, किसानों की आमदनी बढ़ाने व खाद्य व पोषण सुरक्षा में प्रमुख भूमिका निभा सकती है। चीन के बाद भारत दुनिया का दूसरा प्रमुख आलू उत्पादक देश है।

देश को खाद्य सुरक्षित बनाने में कृषि शिक्षा व अनुसंधान को भुलाया नहीं जा सकता। कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषकों के अथक प्रयासों से देश न केवल खाद्य सुरक्षित बना, बल्कि भारत खाद्य आधिक्य देशों की श्रेणी में खड़ा है।

आलू का भारत में आगमन 400 वर्ष पूर्व हुआ और बीसवीं शताब्दी तक देश का विश्व आलू उत्पादन में 1 प्रतिशत से भी कम का योगदान था। वर्ष 1949 में केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान की स्थापना के बाद परिस्थिति बदल गई। प्रजातियों एवं तकनीकों के विकास से आज दुनिया के आलू उत्पादन में भारत का योगदान 12 प्रतिशत है।



पिछले छह दशकों में आलू के अन्तर्गत क्षेत्रफल 22.1 मिलियन हेक्टेयर से घटकर 19.2 मिलियन हेक्टेयर हो गया, जबकि इसी दौरान उत्पादन 270.6 मिलियन टन से बढ़कर 383 मिलियन टन हो गया। यह वृद्धि लगभग 40 प्रतिशत है। दुनिया में आलू की बढ़ती हुई मांग को देखते हुए वर्ष 2050 तक आलू का उत्पादन 711.5 मिलियन टन करना होगा।

भारत में प्रसंस्कृत आलू की मांग अगले 30 वर्षों में काफी तेजी से बढ़ेगी। सबसे ज्यादा मांग फ्रेंच फ्राई के लिए (11.6 प्रतिशत), आलू के फ्लेक्स/पाउडर के लिए (7.6 प्रतिशत) एवं आलू चिप्स के लिए (4.5 प्रतिशत) होगी। वर्ष 2010 की तुलना में वर्ष 2030 में प्रसंस्करण के लिए आलू की मांग 2.8 मिलियन टन से बढ़कर 12 मिलियन टन हो जायेगी।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली की स्थापना 16 जुलाई 1929 को हुई थी। उस समय इसका नाम इम्पिरियल कृषि अनुसंधान परिषद था। वर्तमान में इसके 101 संस्थान एवं 71 कृषि विश्व विद्यालय देश के विभिन्न क्षेत्रों में फैले हैं। यह दुनिया में कृषि अनुसंधान से जुड़े बड़े राष्ट्रीय संस्थानों में से एक हैं। इसके प्रयासों से देश में विभिन्न कृषि क्षेत्रों में वर्ष 1951-2017 के बीच वृद्धि निम्न रही :

1. खाद्यान्न	-	5.4 गुना
2. मछली उत्पादन	-	15.2 गुना
3. उद्यानिकी फसलें	-	10.1 गुना
4. दुग्ध उत्पादन	-	9.7 गुना
5. अंडा उत्पादन	-	48.1 गुना

कृषि अनुसंधान से विभिन्न क्षेत्रों जैसे खाद्यान्न, मछली पालन, उद्यानिकी फसलों, दुग्ध उत्पादन इत्यादि क्षेत्रों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई, जिसके परिणामस्वरूप देश खाद्यान्न आयातक (याचक) देशों की श्रेणी से उभरकर निर्यातक देशों की श्रेणी में आ गया है। आज देश में दुनिया की सबसे बड़ी खाद्य सुरक्षा की योजना लागू है। देश विभिन्न खाद्यान्नों को निर्यात के लिए आयातक देश ढूढ़ रहा है। दुनिया में 2030 तक भुखमरी व कुपोषण हटाने के लिए हमारा देश भी दुनिया के अन्य देशों के साथ प्रयास कर रहा है जिसमें भविष्य में ज़िंक, आयरन इत्यादि पोषक तत्वों की मात्रा आलू की नई प्रजातियों में बढ़ाकर कुपोषण को दूर करने हेतु प्रयासरत हैं। देश के बच्चों व महिलाओं में रक्त अल्पता विशेष रूप से देखी जाती है जिसके निवारण में आलू एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।



‘माताभूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या’

बृजेश सिंह, उ.श्रे. सहा.

वे.क्र. 702565, भा.जी.बी. निगम,

मं. कार्या. सिटी सेंटर, ग्वालियर

प्रकृति स्वयं में एक सुव्यवस्था है। अपने मूलरूप में कहीं भी उसमें अस्त-व्यस्तता एवं अव्यवस्था नजर नहीं आती है। यह तो हमारे दृष्टिदोष का ही परिणाम है कि प्रकृति एवं इसके घटक हमें अव्यवस्थित एवं उजड़े हुए प्रतीत होते हैं और हम ही अपने दृष्टिकोण को नजर-अंदाज करके सुव्यवस्था एवं सुरम्य सामंजस्य को विशृंखलित कर अव्यवस्था लाते हैं। हम प्राकृतिक पर्यावरण को नष्ट करते हैं और उसके स्थान पर कृत्रिम पर्यावरण को नैसर्गिक मानते हैं। वन में उगे पेड़-पौधे, पादप, घास एवं उसमें विचरते जीवों को नष्ट करते हैं, क्योंकि वहाँ पर गंदगी दिखती है। स्वच्छता एवं सफाई के रूप में हम इन सबको नष्ट कर देते हैं। हमें प्रकृति के विभिन्न घटकों के बीच की कड़ी नजर नहीं आती और यही कारण है कि पर्यावरण की विनाशलीला प्रारंभ हो जाती है।

प्रकृति बुद्धिगम्य नहीं है। उसे बुद्धि के द्वारा बूझ पाना कठिन ही नहीं, असंभव है। प्रकृति हमारी माँ स्वरूप है। इसी कारण अथर्ववेद में ‘माताभूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या’ कहा गया है, अर्थात् धरती हमारी माता है और हम इसकी संतान हैं। संतान माता की गोद में पलती-बढ़ती-विकसित होती है। उसके ममत्व भरे आँचल में सुरक्षित एवं संरक्षित रहती है। यही उसका नैसर्गिक आश्रयस्थल है, परंतु जब वह इस आश्रयस्थली को नष्ट करने की कुचेष्टा करता है तो वह स्वयं को एवं अपनी माता, दोनों को क्षति पहुँचाता है। इससे दोनों को अपार नुकसान होता है। वर्तमान समय में प्रकृति में आ रहे विचित्र एवं अकल्पित बदलाव इसी का परिणाम हैं। हम सभी ने प्राकृतिक पर्यावरण एवं परिवेश की सूक्ष्म एवं स्थूल दोनों कड़ियों को बुरी तरह से विनाश किया है। इसमें प्राकृतिक घटनाचक्र टूटा-बिखरा है। इसके टूटने-बिखरने से मौसम में परिवर्तन आया है। जाड़े में गरमी, गरमी में वर्षा और वर्षा में सूखे का प्रकोप दिखाई पड़ रहा है। आज कहीं अतिवृष्टि से आई बाढ़ से लाखों लोग एवं जीव बेघर हो रहे हैं, कहीं अनावृष्टि के कारण जीव तड़प रहे हैं तो कहीं जंगलों में आग लग रही है तो कहीं फसलों को अपार नुकसान हो रहा है।

मौसम के परिवर्तन का प्रभाव इंसानी जिंदगी पर भी दृष्टिगोचर हो रहा है, क्योंकि प्रकृति में जड़ और जीव, दोनों के बीच गहरा संबंध है। अकेला इंसान उस धरती में जीवित रहने की कल्पना नहीं कर सकता है। हमारे जीवन के लिए कितने जीवों, वृक्ष-वनस्पतियों का योगदान है, इसकी गणना नहीं की जा सकती है। जो हम साँस लेते हैं, वह वनस्पति जगत की देन है। हमारे आहार का आधार भी वही है। आवास-निवास का ढाँचा भी उन्हीं के माध्यम से खड़ा होता है। जो जल हमें जीवन देता है, प्यास बुझाता है, स्वच्छता एवं सफाई प्रदान करता है, वह नदियों की धाराओं से प्रवाहित होकर आता है या धरती को फाड़कर निकाला जाता है। नदियों में जल-धारा प्रवाहित होती रहे और भूजल का स्तर सामान्य बना रहे, इसके लिए मौसम चक्र की आवश्यकता पड़ती है। बादल बनें और हरियाली उसे आकर्षित करे तथा वे बरसें, तभी जल मिल पाता है।

इसी प्रकार हमारा जीवन प्रकृति के सभी घटकों पर पूरी तरह से आश्रित एवं आधारित है। जीवनयापन के लिए हमें प्रकृति के इन घटकों के साथ साहचर्य एवं सामंजस्य रखना पड़ता है। यह सामंजस्य जितना गहरा एवं संतुलित होगा, हमारा जीवन उतना ही सुखी, संतुष्ट एवं समृद्ध होगा, क्योंकि हमारा जीवन प्रकृति के साथ अनन्य रूप से जुड़ा है। हम इससे जुदा एवं अलग होकर जीने की कल्पना भी नहीं कर सकते। प्रकृति हमारे जीवन का प्राण है, जिससे हमारा जीवन संचालित एवं परिचालित होता है। हमारा जीवन प्रकृति को प्रभावित करता है और प्रकृति हमें प्रभावित करती है। प्रभाव का यह क्षेत्र बड़ा ही व्यापक और विस्तृत है। यह प्रभाव आंतरिक



एवं बाह्य, दोनों रूपों में होता है।

जब प्रकृति में विक्षोभ आता है तो हमारा जीवन प्रभावित होता है। प्रकृति विक्षोभ अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रांति, ग्रहणकाल आदि में अधिक होता है। कुछ अंतर्ग्रहीय दशाओं में भी यह विक्षोभ बढ़ा हुआ होता है। इन दिनों भूकंप, ज्वालामुखी, चक्रवात, बाढ़, तूफान आदि की घटनाएँ अपने चरम पर होती हैं। इनके घटित होने से अपार जन-धन की हानि होती है। चारों तरफ हाहाकार मच जाता है। इससे निपटने के लिए कोई साधन काम नहीं आता है। घटना जब एक बार घट जाती है तो उसे रोका नहीं जा सकता, बस इतना हो सकता है कि जो हानि हुई होती है, उसकी क्षतिपूर्ति तीव्रता एवं तत्परता के साथ की जा सके और फिर से सब कुछ सामान्य हो सके। घटना न घटे, यह तो संभव नहीं है, घटना तो घटेगी, हाँ, इतना संभव है कि इस घटना से स्वयं को, मानव मात्र को कैसे बचाया जाए। विशिष्ट परिस्थितियों में विशिष्ट ढंग से घटनाओं को रोका भी जा सकता है और उन्हें मोड़ा भी जा सकता है, परंतु उसे क्या कहें, जब हम घटनाओं को घटने के लिए स्वयं आमंत्रित करें।

आज हम अपने निहित स्वार्थ एवं अहंकार की पूर्ति के लिए प्रकृति का जितना शोषण कर सकते थे, उससे कई गुना अधिक कर चुके हैं। इस शोषण से प्राकृतिक संतुलन बुरी तरह से चरमरा गया है। अपने स्वार्थ के लिए इंसान ने भी प्रकृति पर अत्याचार किया और सामूहिक रूप से राष्ट्रों ने इस पर भीषण अपराध किया। बड़े-बड़े उद्योग, फैक्ट्री, मशीन आदि के निरंतर प्रयोग से प्रदूषण की सीमाएं अपनी सामान्य सीमाओं से कई गुना अधिक लाँघ चुकी हैं। प्रदूषण ने प्रकृति के सभी पाँचों तत्वों को प्रदूषित किया है। जल, वायु, जमीन, आकाश सभी प्रदूषण के भार से आक्रांत हैं। इससे प्राकृतिक संतुलन समाप्त हो गया है। प्रदूषण ने जीवन को बोझ बना दिया है, क्योंकि इससे प्राकृतिक आपदाओं के साथ नई-नई न समझ में आने वाली बीमारियाँ भी फैलने लगी हैं। बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू जैसे कभी न सुने जाने वाले रोग पनपने लगे हैं, जिनका कि अभी कोई उपचार नहीं है। प्रदूषण एवं इसके प्रभाव का आँकड़ा अति चिंतनीय है, परंतु हम इस आँकड़े की बात नहीं करते हैं। यहाँ पर वर्तमान प्राकृतिक आपदा एवं मानवीय दुरवस्था के मूल कारणों की बात की जा रही है कि आखिर ऐसे हो क्यों रहा है और इसका निराकरण संभव है या नहीं?

प्राचीनकाल में प्रकृति को गहराई से देखने, जानने एवं समझने वाले दृष्टा ऋषि हुआ करते थे। ऋषि अपनी भेदक एवं सूक्ष्मदृष्टि से मानव एवं प्रकृति के सूक्ष्म एवं संवेदनशील संबंधों का विश्लेषण करते थे। इन संबंधों में कैसे सामंजस्य बना रहे, व्यतिक्रम न आए और सुमधुर संबंधों में सर्वत्र सुख, शांति एवं समृद्धि का वातावरण बना रहे, इसके लिए वे सतत् सचेष्ट एवं सजग रहते थे। यदि कहीं कोई व्यतिक्रम आता था या भविष्य में कहीं इसकी कोई संभावना नजर आती थी तो वे आध्यात्मिक एवं मानवीय पुरुषार्थ में संयोग-सहयोग से उसका निराकरण भी करते थे। इसी कारण विभिन्न प्रकार के यज्ञानुष्ठान, जप, साधना आदि के साथ-साथ हरीतिमा संवर्द्धन, स्वच्छता अभियान आदि का कार्यक्रम चलाते थे।

ऋषि सर्वप्रथम समस्याओं को समझते थे और उनके अनुरूप समाधान ढूँढ़ निकालते थे। इतिहास में ऐसी अनेक घटनाओं का वर्णन मिलता है, जिनके घटने से यह धरती कई बार नष्ट हो चुकी होती, परंतु ऐसा इसलिए नहीं हुआ, क्योंकि उसका समग्र समाधान ही नहीं ढूँढ़ा गया, बल्कि उस घटना को रोका भी गया और उसके स्थान पर प्रकृति को संवर्द्धित करने का भी प्रयास किया गया। धरती पर संकट के बादल तो गहराए, परंतु ईश्वरीय कृपा एवं मानवीय पुरुषार्थ के सहयोग से उस संकट को टाला गया। वर्तमान समय में भी प्रकृति में अब तक के सारे संकटों से बड़ा एक संकट आ खड़ा हुआ है। यदि समय रहते इसका निदान-निराकरण नहीं ढूँढ़ा जा सका तो पता नहीं इसकी कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी।

प्रकृति में प्रदूषण एवं अन्य संकटों के उपजने के मुख्य कारणों में मानवीय कारण आता है। इंसान ही है, जिसने प्रकृति का भीषण शोषण किया है। अपनी स्वार्थ-लिप्सा के लिए उसने ऐसा जघन्य कृत्य कर डाला है जिसका दंड यदि ईश्वर दे तो इस धरती में विरले लोग



ही बच पाएंगे शेष तो इस दंड से समाप्त हो जाएंगे। इस दंड के विधान से इंसान के अस्तित्व को खतरा पैदा हो सकता है। इस पर भी इंसान अपने कुकृत्य से बाज नहीं आ रहा है। वह लगातार प्रकृति के विनाश-कार्य में जुटा हुआ है। प्रदूषण घटने के बजाय बढ़ रहा है। वन-जंगल कटते जा रहे हैं। नदियों के प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं। समुद्र का स्तर ऊँचा उठ रहा है। आसमान में अभेद्य सुरक्षा कवच ओजोन में हुआ छेद लगातार बढ़ रहा है। ये ऐसे कारण हैं जिससे ग्लोबल वार्मिंग एवं अन्य अनेक प्राकृतिक एवं इंसानी आपत्तियाँ-विपत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं। इससे इंसान एवं प्रकृति के बीच असंतुलन पैदा हो गया है और यह निरंतर अस्थिर एवं अनियंत्रित होता जा रहा है।

समस्या तो अब समाधान के पार चली गई है। अब तो जो होगा, उसे झेलने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं बचता है। फिर भी हमें अपने मानवीय पुरुषार्थ से विरत नहीं होना चाहिए। यह मानना चाहिए कि अंधकार चाहे कितना भी सघन एवं डरावना क्यों न हो, एक दिन सबेरा तो आता ही है। प्रकृति में फिर से संतुलन हो, उसमें सभी तत्व समग्र रूप से पुनः क्रियाशील हों, पंचतत्वों में जल, जमीन, वायु, अग्नि, आकाश के बीच सामंजस्य हो, ऋतुचक्र पुनः सुनियोजित हों, मौसम फिर से अपने मूलरूप में स्थापित हो और परिवेश एवं पर्यावरण पुनः समृद्ध हो, इसके लिए हमें अपना पुरुषार्थ करना चाहिए। एक दीपक भी तमस की धरती को चीरने के लिए पर्याप्त होता है, बशर्ते कि वह जलने के लिए संकल्पबद्ध हो।

प्रकृति के प्रति जरा भी संवेदना रखने वालों का आह्वान है कि वे अपने हृदय से भावभरी प्रार्थना करें कि हे ईश्वर ! आप अपनी इस सुरम्य धरती को बचा लें। सामूहिक प्रार्थना का क्रम चलना चाहिए। पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त करने के लिए स्वयं अपनी ओर से प्रयास करना चाहिए। हमें पानी को नष्ट होने से बचाना चाहिए। हमें वृक्षारोपण का संकल्प लेना चाहिए। अधिक संभव न हो तो अपने घरों में, आवास में गमलों में पेड़-पौधे लगाकर हरीतिमा संवर्द्धन करना चाहिए। अपने आसपास के परिवेश को स्वच्छ एवं साफ रखने के लिए सचेष्ट एवं क्रियाशील रहना चाहिए। इस कार्य को योजनाबद्ध तरीके से सामूहिक अभियान एवं आंदोलन का स्वरूप देना चाहिए।

प्रकृति अपनी सुरक्षा स्वयं करने में समर्थ एवं सशक्त है। हमें तो बस इसका माध्यम ही बनना है। हमें प्रकृति के सभी तत्वों को समुचित सम्मान देकर उन्हें संरक्षण देने का संकल्प लेना चाहिए। यही स्वस्तिवाचन है- सभी के कल्याण में हमारा भी कल्याण निहित है। अतः प्रकृति को माता मानकर हमें उसका शोषण नहीं, भक्तिपूर्वक उसकी सेवा करनी चाहिए। यह भावना एवं पुरुषार्थ ही वर्तमान प्राकृतिक संकट का एकमात्र निदान है, जिसे हम सबको अवश्य करना चाहिए। यही सर्वोपरि मानव धर्म है।

**माता भूमि पुत्रोहं पृथिव्या”
(Mata Bhumi putroham prithivyah)**

**अर्थ- पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।
“Earth is my mother I am her son”**



आओ करे हम हिंदी को शत्-शत् प्रणाम

निशा खान, अप्रेंटिस

इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड

ग्वालियर एरिया ऑफिस

आओ करें हम हिंदी को शत्-शत् प्रणाम।

दिलाये अपनी मातृभाषा को हम अंतरराष्ट्रीय पहचान।।

हिंदी दिवस प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाता है। भाषा हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। बिना भाषा के हम अधूरे हैं। जरा सोचिये हमें विचार कैसे आते हैं, अगर कोई भाषा न हो तब विचार करके देखिये, आप कुछ भी विचार नहीं कर पायेंगे, आपको कोई विचार ही नहीं आएगा। हमें विचार उसी भाषा में आते हैं जो हमें आती है क्योंकि हिंदी हमारी मातृभाषा है। अतः हमारे आसपास तो सभी हिंदी भाषी हैं और हमको हिंदी शब्दावली ही सुनने को मिलेगी और हम बेहतर विचार कर पायेंगे इसलिए हिंदी बोलिए हिंदी में सोचिये। निज यानी हिंदी भाषा से ही उन्नति सम्भव है, क्योंकि यही सारी उन्नतियों का मूलाधार है। विभिन्न प्रकार की कलाएँ, असीमित शिक्षा तथा अनेक प्रकार के ज्ञान, सभी देशों से जरूर लेने चाहिये, परन्तु उनका प्रचार मातृभाषा में ही करना चाहिए।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने भी कहा है -

‘निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।’



हिंदी भाषा है वही



अलका शर्मा, अप्रेंटिस

इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, ग्वालियर एरिया ऑफिस

आते ही मुख पर अति सुखद जिसका
पावन नाम ही।
इक्कीस कोटि-जन-पूजता हिंदी भाषा है वही॥

करो अपनी भाषा पर प्यार।
जिसके बिना मूक रहते हुए,
रुकते सब व्यवहार॥

भाषा बिना व्यर्थ ही जाता ईश्वरीय भी ज्ञान,
सब दानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान।
असंख्यक है इसके उपकार।
करो अपनी भाषा से प्यार॥

यही पूर्वजों का देती है तुमको ज्ञान प्रसाद,
और तुम्हारे भी भविष्य को देगी शुभ संवाद।
बनाओ इसे गले का हार।
करो अपनी भाषा से प्यार॥



हिंदी मेरी भाषा है



लता रैकवार, वरिष्ठ बिजनेस असिस्टेंट

ग्वालियर एरिया ऑफिस

हिंदी मेरी भाषा है,
हिंदी मेरी आशा है।

हिंदी का उत्थान करना,
यही मेरी जिज्ञासा है।

हिंदी की बोली अनमोल,
एक शब्द के कई विलोम।

हिंदी हिन्द हिमालय पर शोभित,
हर्षित होते बोल के सोम।

मीठी बोली अद्भुत वाणी संग
बढ़ती प्रेम पिपासा है।



माँ



मनोज कुमार गिरि, प्र.स्ना.शि. (गणित)

केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकनपुर, ग्वालियर

माँ सिर्फ एक शब्द नहीं,
ये एक अहसास है
अपने वजूद के होने का।
उसी के आँचल में ये,
विश्वास मिलता है, कुछ न खोने का।
माँ हो तो सब कुछ है जिन्दगी में
यही तो वो शब्द है, अक्षर है,
जो एक शिशु बिना,
सिखाए ही बोलता है।
उसके हर एक स्वप्न
का द्वार खोलता है।
माँ ही तो है जिसका हर शब्द,
तुम्हारी चिन्ताएं हरती है।
तुम्हारा हर स्वप्न माँ,
का मन पूरा करता है।
माँ के हर शब्द में सिर्फ,
फिक्र तुम्हारी होती है।
क्या तुम्हारी बातों में,
जिक्रों में माँ होती है?

तुम कितने भी ऊँचे उठ
जाओ अपने जीवन में,
पर तुम सदैव रहोगे,
वही शिशु हरदम माँ के मन में।
इसलिए मेरी यही,
सभी से याचना है।
माँ का मन कभी दुःखी न हो,
तुम्हारे कटु वचनों से
मेरी यही कामना है।
सौभाग्यशाली हैं आप,
कि आपके पास माँ है।
फिर दुनिया की दुनियावी,
चकाचौंध एक तरफ।
फीकी है दुनिया की
दौलतें जहाँ माँ के बगैर।
माँ है तो सब कुछ है,
वरना कुछ भी नहीं,
कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं।



ऐ दिल-ए-नादान



श्रीमती अबिंदर कौर

केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकनपुर, ग्वालियर

ऐ दिल-ए-नादान
कैसे समझाऊं तुझे
कितनी जिम्मेदारियाँ हैं
इन कंधों पर मेरे।
कभी बेटी तो कभी बहन बनकर कभी पत्नी
बहू और माँ बनकर।
कभी आई थी मैं नन्हीं परी बनकर
तड़पती थी माँ दर्द से, भीगा था उसका
दामन जनकर
जाना मैंने उस दर्द को माँ बनकर
समझा उस अहसास को जननी बनकर।
स्कूल के दिन थे बड़े निराले, सारी दुनिया
अपनी सी लगती थी, हम थे बड़े मतवाले
लगता था पंख लगाकर उड़ जायें खुले आसमानों में
मैं आज भी दिल के आशियानों में।
पर तभी आँख है खुलती
और पाती हूँ, खुद को खड़ी
जीवन साथी और बच्चों के अरमानों में
पीछे मुड़ के देखा तो कोई गिला
नहीं ऐ खुदा जो दिया जैसा दिया
मेरे लिए है जुदा।
अभी शेष है जिंदगी कर जाऊँ कुछ
सबसे जुदा।
कहते हैं तेरे घर में देर है, अंधेर नहीं
तुझसे विश्वास उठ जाए
ऐसी मन की दशा नहीं।



उठो-जागो और श्रेष्ठता को प्राप्त करो

देवेन्द्र कुमार लवानियाँ, प्र.स्ना.शि. (संस्कृत)

केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकनपुर, ग्वालियर

मेरे साहसी युवकों, यह विश्वास रखो कि तुम्हीं सब कुछ हो- महान कार्य करने के लिए इस धरती पर आये हो। गीदड़ घुड़कियों से भयभीत न हो जाना - चाहे वज्र भी गिरे, तो भी निडर हो खड़े हो जाना और कार्य में लग जाना। तुम्हारे देश को वीरों की आवश्यकता है अतः वीर बनो, पर्वत की भाँति अडिग रहो। भारत चाहता है एक नयी विद्युत शक्ति, गम्भीर से गम्भीर कठिनाइयों में भी अपना मानसिक संतुलन बनाये रखो।

तुम क्यों रोते हो बन्धु? तुम्हीं में ही सारी शक्ति निहित है। ऐ महान्, अपनी सर्वशक्तिमान प्रकृति को उद्बुद्ध करो, देखोगे, यह सारी दुनिया तुम्हारे पैरों पर लोटने लगेगी। आज देश को आवश्यकता है साहस और वैज्ञानिक प्रतिभा की। हम चाहते हैं प्रबल साहस, प्रचण्ड शक्ति और अदम्य उत्साह। भाग्य लक्ष्मी उसी के पास आती है जो पुरुषार्थी है। प्राचीन धर्मों ने कहा - 'नास्तिक वह है, जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता। नया धर्म कहता है - 'नास्तिक वह है जो स्वयं में विश्वास नहीं करता।' बल ही जीवन है और दुर्बलता मृत्यु। हम दुःखी हो जाते हैं, क्योंकि हम दुर्बल हैं। हम झूठ बोलते हैं, चोरी करते हैं, हत्या करते हैं, तरह-तरह के अपराध करते हैं- क्यों? इसलिए कि हम दुर्बल हैं। इसलिए हम सबको बलशाली होना चाहिए।

अतः आप सभी नीति परायण बनें, साहसी बनें, धुन के पक्के बनें - तुम्हारे नैतिक चरित्र में कहीं एक धब्बा तक न हो, मृत्यु से भी मुठभेड़ करने की हिम्मत रखो। धर्म के सिद्धान्तों के बारे में माथापच्ची करने की कोई आवश्यकता नहीं - 'कायर ही पाप कर्म करते हैं, साहसी कभी नहीं।'।

मनुष्य सारे प्राणियों से श्रेष्ठ है, सारे देवताओं से श्रेष्ठ है, उससे श्रेष्ठ और कोई नहीं। देवताओं को भी फिर से धरती पर नीचे आना पड़ेगा और मनुष्य शरीर धारण कर मुक्ति प्राप्त करनी होगी। केवल मनुष्य ही पूर्णता प्राप्त करता है, देवताओं तक के भाग्य में यह नहीं है।

अतः खड़े होओ, साहसी बनो, शक्तिमान होओ। सारा उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर लो और जान लो कि तुम्ही अपने भाग्य के विधाता हो। तुम्हें जो कुछ बल और सहायता चाहिए, सब तुम्हारे ही भीतर है। अतएव अपना भविष्य तुम स्वयं गढ़ो।

उठो, जागो और तब तक
नहीं रुको जब तक लक्ष्य
ना प्राप्त हो जाये ।



एकता टूटने पर

दुलेश्वरी यादव, कक्षा 7वीं

केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकनपुर, ग्वालियर

सुनहरा मुर्गा अपनी तरह का एक ही था। इसलिए बहुत से कसाईयों की नज़र उस पर थी। काला बंदर भी अपनी तरह का एक ही था, इसलिए चिड़ियाघर के लोग उसे पकड़ने की कोशिश में थे। लाल अमरूद के पेड़ पर लाल-लाल अमरूद लगते थे। उसके जैसा भी कोई दूसरा पेड़ वहाँ नहीं था, इसलिए फल वालों से लेकर स्कूल के बच्चों तक को उसके अमरूदों का लालच था। पर उन तीनों ने मिलकर ऐसी योजना बना रखी थी, कि कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाता था। जब कोई कसाई मुर्गे को पकड़ने के लिए आता, तो पेड़ उसे लुभाने के लिए दो-तीन पके अमरूद नीचे टपका देता। उन अमरूदों की खुशबू ही ऐसी थी कि कसाई पहले अमरूद चखने में लग जाता। इस बीच बंदर दो-तीन कच्चे अमरूद तोड़कर इस तरह उसके सिर पर निशाना बनाता कि कसाई अपना होश खो बैठता। आखिर जब वह ऊपर की तरफ देखता तो बंदर मुर्गे को पीठ पर बिठाए मुँह पिचकाता नजर आता। कसाई हारकर वहाँ से चलने लगता, तो उसे पता चलता कि उसका थैला भी गायब है। थैला सामान सहित पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर लटक रहा होता। साथ ही पेड़ सांय-सांय करता उसकी हालत का मज़ा ले रहा होता।

जब चिड़ियाघर के लोग बंदर को घेरने के लिए आते, तब पेड़ उसे अपनी पत्तियों और शाखाओं में छिपा लेता। किसी की उस पर नज़र नहीं पड़ती। नीचे मुर्गा जोर-जोर से पंख फड़फड़ाकर इतनी धूल उड़ा देता कि उनके लिए वहाँ खड़े होकर सांस लेना मुश्किल हो जाता। आखिर वे वहाँ से हटने लगते तो पेड़ अपने सबसे पिलपिले अमरूद नीचे टपकाकर उन्हें दे देता। तो वे किसी तरह गिरते-पड़ते वहाँ से लौटते, तो उन्हें पता चलता कि उनका बंदर पकड़ने का जाल मुर्गे की चोंच में है और मुर्गा पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर बैठा है। जब फल वाले या स्कूल के बच्चे पेड़ से अमरूद तोड़ने के लिए आते, तब पहले उनका सामना बंदर से होता। बंदर इस तरह उनके इर्द-गिर्द चक्कर काटता और उन्हें डराता कि उनका पेड़ के नजदीक जाने का हौसला ही न होता। और बाद में भागते तो पता चलता कि अमरूद के लिए जो टोकरी साथ लेकर आए थे वह बंदर के सिर पर है।

एक दिन घनघोर घटाएं घिर आईं। पहले मूसलाधार वर्षा हुई, फिर बहुत ओले गिरे। जब उन तीनों ने साथ मिलकर अपना बचाव करने की योजना बनाई थी, तब इस दिन की बात नहीं सोची थी। पेड़ अपनी जगह परेशान था। ओलों से उसके सब अमरूद नष्ट हुए जा रहे थे। बंदर का अपनी जगह भीग-भीगकर बुरा हाल था। ऊपर से ओलों की मार उसकी जान लिए जा रही थी। मुर्गा भी परेशान था, क्योंकि उसके पंख भीग गए थे, जिससे उसके पंख खुल नहीं रहे थे। पेड़ ने झल्लाकर कहा, मैंने आज तक हर मुसीबत में इनकी जान बचाई है, पर आज मुझ पर इतनी बड़ी मुसीबत आई है, तो इन्हें अपनी-अपनी पड़ी है।

बंदर ने ठंड से कांपते हुए कहा कि मैंने भी क्या साथी चुन रखे हैं। मुर्गे ने कुड़बुड़ाना शुरू कर अपनी बात कही कि बंदर का और पेड़ का तो हमेशा साथ है पर आज तक तो मैं इनकी मुसीबत को अपनी मुसीबत मानता आया हूँ। तीनों इतने नाराज़ थे कि आपस में बात भी नहीं की। थोड़ी देर बाद बारिश और ओले थम गए। उसी रोज एक कसाई आया न ही पेड़ ने फल गिराए। न बंदर ने मुर्गे को अपनी पीठ पर बैठाया। न कसाई का थैला उड़ाया। मुर्गा कसाई की पकड़ में आ गया था। अगली रोज चिड़िया घर वाले लोग आए और जाल बिछा दिया, जिस डाली पर बंदर बैठा था, उसी डाली को जमीन पर गिरा दिया। थोड़ी देर में बंदर जाल में था और चिड़ियाघर के लोग उसे घसीटते हुए लिए जा रहे थे, वह अपने हाथ-पैर मारता तो वे उसे मारने लगते थे उससे अगले दिन बहुत से लोगों ने पेड़ घेर लिया। पेड़ ने



सहमकर देखा कि उनके पत्थरों और डंडों का कोई जवाब उसके पास नहीं था, उसके सारे अमरुद झड़ा लिए गए। फिर किसी ने उस पेड़ को काटना शुरू कर दिया। थोड़ी देर बाद अमरुद टोकड़ियों में भरकर जा रहे थे। पेड़ की लकड़ियां लोगों के कंधे पर जा रही थी, वहाँ एक गिलहरी रहती थी, वह मुर्गा, बंदर और पेड़ की आपसी योजना पर चकित हुआ करती थी, ये सब जो हुआ तो उसने लंबी सांस के साथ मन में कहा - 'जा रहा है यह भी लोगों का चूल्हा जलाने के लिए।'

मेरी माँ



निकिता चौहान, कक्षा 8 वीं अ

केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकनपुर, ग्वालियर

घुटनों से रेंगते-रेंगते
कब पैरों पर खड़ी हुई,
तेरी ममता की छांव में
जाने कब बड़ी हुई।

काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है,
मैं ही मैं हूँ हर जगह
प्यार यह तेरा कैसा है।

सीधी साधी भोली भाली
मैं ही सबसे अच्छी हूँ
कितनी भी हो जाऊँ बड़ी माँ
मैं आज भी तेरी बच्ची हूँ।



गंगा (हर-हर-गंगे)

●
महक शर्मा, कक्षा 8 वीं

केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकनपुर, ग्वालियर

गंगा है देवी हम सब की,
सबको जल ये देती है।
पर क्यों हम सब इसको गंदा करते हैं?
जबकि ये हमारी देवी है।

गोमुख इसके मात-पिता,
हिमालय की ये बेटी है।
राज्य-राज्य में जल देकर ये,
समुद्र में मिल जाती है।

गंगोत्री, हरिद्वार, कानपुर, बनारस,
इससे पोषित हैं।

यह हमको प्रेम अमृत देती है,
हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख सभी को,
पोषित करती है।

प्रदूषण हम इसे देते हैं,
जबकि ये हमारी देवी है।

गंगा को फिर स्वच्छ बनाएँगे,
गंगा मिशन चलाएँगे।
भारत में बहने वाली ये,
फिर जल से पोषित होगी।



स्कूल



निशा कुमारी, कक्षा 8 वीं

केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकनपुर, ग्वालियर

अचानक से मन में यह बात आई
क्यों करनी पड़ती है पढ़ाई।

रोज सुबह स्कूल के लिए रोते-रोते उठना
ना जाने की ज़िद करते हुए मम्मी से टुकना।

फिर स्कूल जाते ही मुँह पे खुशी आ जाती
जब हिंदी वाली मेम कहानियाँ सुनाती।

फिर वो आ जाते थे जिनका नहीं था इंतजार
जिन्हें देखकर सब बच्चों को चढ़ता था बुखार।

हमारे गणित वाले सर जिनका गुस्सा नाक पे रहता
कोई बच्चा उनके सामने कुछ न कहता।

स्कूल ने सबकी ज़िन्दगी संवारी है
तभी तो यह सबको प्यारी है।



एक सपना बापू का



मुस्कान, कक्षा 6 वीं अ

केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकनपुर, ग्वालियर

एक सपना बापू का
एक सपना हमारा
दोनों का एक ही सपना
तो बना एक सपना
सपना था भारत को स्वच्छ बनाना
सच कर देंगे इसको
दूर भगाएं बीमारी को
दूर भगाएं गंदगी को
ऐसा था बापू का सपना
ऐसा है हमारा सपना
सच कर देंगे इस सपने को
कर देंगे इस सपने को सच
एक-जुट होकर
करेंगे साफ-सफाई
एक सपना बापू का
एक सपना हमारा है
सच हो गया सपना
आज सुंदर भारत हमारा है।



स्वच्छ रहे यह देश हमारा!



प्रियांशी भट्ट, कक्षा 6 ए

केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकनपुर, ग्वालियर

स्वच्छ रहे यह देश हमारा
लगे जहाँ में सबसे प्यारा ॥

मिल जुलकर हम करें सफाई
इसी में है सबकी भलाई ॥

कूड़ा-कचरा न सड़क पे डालो
बीमारी को तुम न पालो ॥

मिलकर हम सब पेड़ लगाएं
पर्यावरण को हरा बनाएं ॥

जगमग-जगमग सड़कें चमके
देश हमारा दुनिया में दमके ॥

आओ मिलकर कसम यह खाएं
अपना भारत स्वच्छ बनाएं ॥

सब मिलकर यह करो इरादा
स्वच्छ रहे यह देश हमारा ॥





गांव का भोला



हरिओम कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय, म.प्र., ग्वालियर

‘होश वालों के सयाने शहर में,
गांव का भोला दीवाना आ गया,

घर की जब दहलीज से बाहर चले,
तब समझ हमको जमाना आ गया,

आह भी लब के सयाने हो गए,
आंख का आंसू छुपाना आ गया,

मुश्किलें, परेशानियों का डर मिटा,
दर्द में भी मुस्कुराना आ गया,

ए.सी. में भी नींद जब आई नहीं,
याद फिर पीपल पुराना आ गया,

घर से जब पूछा गया सब खैरियत?
सच छुपा लब पर बहाना आ गया,

नौकरी ले आई जब बाहर हमें,
हाथ चूल्हे पर जलाना आ गया’





इंसा न का मन



स्वर्णलता गुप्ता

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी कक्ष
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय, म.प्र., ग्वालियर

इंसा का मन हैं ँक ँसा दरिया,
जिसे खुद वो समझ न सका।
पड़ा जब किसी मुश्किल में,
घबरा कर संभल न सका।
कर के जब अनुचित/अनुपयोगी कार्य,
कि जीवन अमूल्य है व्यर्थ क्यों गवायां
इस तत्व को भी वो समझ न सका।
जीवन के द्वंद्व, आत्म मंथन और पशोपेश में,
मन की कोमलता को संभाल न सका।
जब दो चार हुआ जिंदगी की हकीकत से,
मधुरता, सहायता, प्रेम और दया दिखा न सका।
प्रकृति और प्रेम, इन तत्वों को समझ न सका
जिंदगी अधूरी है इनके बिना, ये भी समझ न सका
प्रकृति खुद में संपूर्ण हैं, इनके बिना अपूर्ण हैं इंसा
अपनी खुदगर्जी में इतना भी वो समझ न सका।



दो कविताएं



डॉ. राम सहाय बरैया

अतिथि रचनाकार

किचन गार्डन

गमलों में ही सजा हुआ है,
छत पर सुंदर बाग।
चाहे पालक, धनियाँ खाओ,
चाहे चने का साग।
फलों से लदी हुई मौसमी,
केला खड़े हैं पास।
गमले लगे देख नींबू फल,
होता सुख आभास।
प्याज, टमाटर, लहसुन, गोभी,
फूली गुड़हल लाल।
लाल ही फूल गुलाब महक रहे,
सुंदर भवन के भाल।
महके खड़ी द्वार चमेली,
करे प्रदूषण दूर।
तुलसी, अदरक, लहसुन खाकर,
हुआ कोरोना चूर।

पुदीना

गर्मी के दिन आए, पुदीना सबको भाए।
जो भी इसकी पत्ती खाता,
मुँह सुगंध से भर जाता।
लार ग्रंथियाँ सक्रिय होकर,
पाचन सही बनाए।
पुदीना सबको भाए।
अब गर्मी के दिन आए।
गर्मी में यदि लू लग जावे,
पीस पत्तियाँ पना बनावे।
जीरा, नमक मिला पीने से,
लू से प्राण बचाए।
पुदीना सबको भाए।
पुदीना सबको भाए।
अब गर्मी के दिन आए।
इसके कई लाभ हैं भाई,
दाँतों की यह करे सफाई।
करे कीटाणुओं से रक्षा,
जीभ भी यह चमकाए।
पुदीना सबको भाए।
अब गर्मी के दिन आए।
रक्त-चाप भी करे नियंत्रित,
तन-मन को करता है सिंचित।
फोड़ा-फुंसी सभी मिटाता,
चेहरे पर यह ठंडक लाए।
पुदीना सबको भाए।
अब गर्मी के दिन आए।



परियोजना अर्पण

धार्मिक स्थलों पर उपयोग किए गए फूलों को नया जीवन देना

पुष्प अपशिष्ट प्रबंधन परियोजना औचित्य



मंदिरों में पूजा -

भारत में पूजा-अर्चना जीवन जीने का एक तरीका है तथा भक्त मंदिरों में फूल, पत्ते, फल, नारियल, कपड़े, इत्यादि के विभिन्न प्रकार के भेंट चढ़ाते हैं, जिसमें से फूलों की भेंट अत्यधिक मात्रा में पाई जाती है।



फूल-पूजा के पश्चात -

फूल अन्य अपशिष्टों के साथ कूड़ेदान में या किसी नदी-नाले में फेंक दिए जाते हैं या फिर कचड़े के रूप में खुले स्थान में छोड़ दिए जाते हैं, जिससे कि विभिन्न पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न होती हैं।



हरित मंदिर संकल्पना -

‘हरित मंदिर संकल्पना’ परिसिष्ट प्रबंधन के लिए शासकीय नीतियों के नियमन तथा मंदिरों के प्रति सतत् विकास को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

परियोजना का विवरण	परियोजना का उद्देश्य
संयंत्र क्षेत्र - 15000 वर्ग फीट	निर्मल्य का प्रभावी उपयोग
भूमि का मूल्य - 82000 वर्ग मी.	अपशिष्टों को कम करना
तैनात जनशक्ति - 09	महिला सशक्तिकरण
समाविष्ट मंदिर - 05	पुनर्चक्रण
तकनीकी विशेषज्ञ - 02	समाज में सकारात्मक बदलाव
प्रति दिवस अपशिष्ट - 2 टी.पी.डी.	हर्बल (जड़ी-बूटी संबंधी) उत्पाद
अंतर्ग्रहण	फूलों के जीवन-काल में वृद्धि



- प्रति दिवस उत्पादन - 140 कि.ग्रा.
उत्पाद - धूपबत्ती, रंग
संयंत्र संचालन द्वारा - पुष्पांजली इको निर्मित प्राइवेट लि. उज्जैन

पुष्प अपशिष्ट प्रबंधन परियोजना

प्रक्रिया का विवरण -



पृथक वाहनों द्वारा मंदिरों से फूलों का एकत्रण

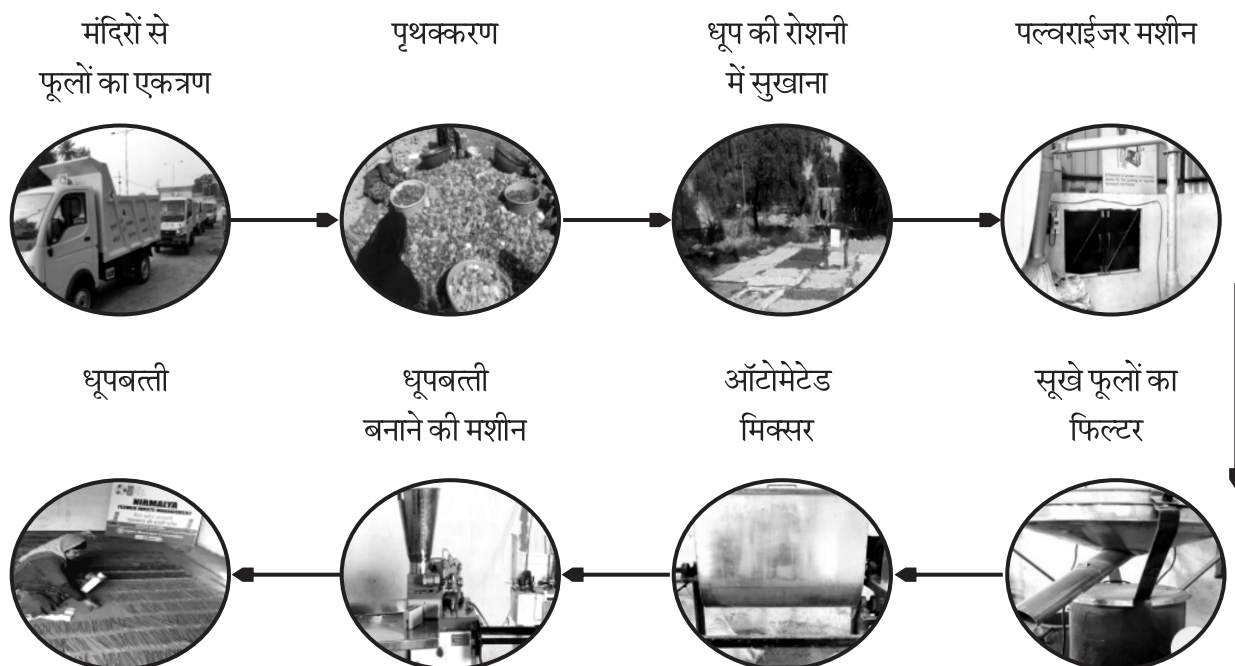


एकत्रित अपशिष्टों का पृथक्करण एवं फूलों की पिसाई



जैविक धूपबत्ती एवं कोंस (Cones) तैयार करना

संयंत्र



कैपेक्स (capex) (रु.)

पल्वराईजर मशीन	- 1, 32, 000
फिल्टर मशीन	- 68, 000
मिक्सिंग मशीन	- 83,000
सेमी ऑटोमेटेड धूपबत्ती (2 प्रति)	- 2, 68, 000
विक्रय के लिए काउंटर - एक काउंटर	- 37, 000
पैकेट की डिजाइनिंग लागत	- 6000
कुल	- रु. 5, 94, 000

राजस्व उत्पादन (रु.)

एक पैकेट की कीमत	- 30
प्रति दिवस विक्रय	- 105
प्रति दिवस कुल विक्रय	- 3150
प्रति माह आय	- 94500

ओपेक्स (Opex)

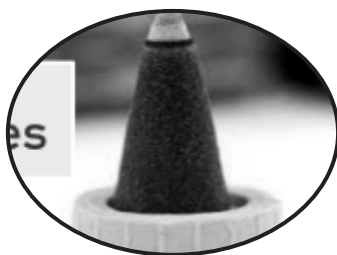
रु. 9000 प्रति माह की दर से विक्रता-2	- 18000 प्रति माह
प्रति दिवस रु. 3.48 की दर से पैकेट लागत पैकेट 105	- 10962 प्रति माह
प्रति मजदूर लागत : (9 मजदूर) 150 प्रति दिवस	- 40500 प्रति माह
मशीन संधारण	- 1000 प्रति माह
यातायात लागत	- 2000 प्रति माह
विद्युत शुल्क	- 1800 प्रति माह
कच्ची सामग्री लागत रु. 2070 की दर से प्रति दिवस	- 62100 प्रति माह
बटर पेपर लागत @ 1 * 105 = 105 प्रति दिवस	- 3150 प्रति माह
विविध व्यय	- 10000 प्रति माह
कुल	- 149512 प्रति माह



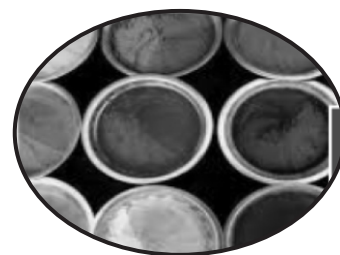
कैपेक्स (Capex)	- 5, 94, 000
ओपेक्स (Opex) वार्षिक	- 17, 94144
राजस्व वार्षिक	- 1134000
परियोजना ने टीपींग शुल्क बचाए हैं	- 1209398.4
@1679.72/टन. 60 टन	
= 100783 प्रति माह	
परियोजना ने प्रस्संकरण शुल्क बचाए हैं	- 119073.6
@165.38/टन * 60 टन	
= 9922.8 प्रति माह	
प्रति वर्ष कुल बचत	- 13, 28472
कुल राजस्व + बचत	- 24, 62472

भविष्य की योजना

धूप कोंस का निर्माण



रंगोली के रंग



गुलाब जल



गुलाब धूपबत्ती



पुष्प अपशिष्टों का रंगीन समाधान



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), ग्वालियर

केंद्रीय सरकार के देश भर में फैले हुए कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच की आवश्यकता महसूस की गई, ताकि वे मिल बैठकर सभी कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि चर्चा कर सकें। फलतः नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का निर्णय लिया गया। इन समितियों के गठन का प्रमुख उद्देश्य केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना, इसे बढ़ावा देना और इसके मार्ग में आई कठिनाइयों को दूर करना है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु ग्वालियर, म.प्र. में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), ग्वालियर कार्यरत है। प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखा परीक्षा-प्रथम) नराकास, ग्वालियर का सचिवालय है। वर्तमान में नराकास, ग्वालियर के अध्यक्ष, प्रधान महालेखाकार श्री डी. साहू एवं सचिव, उप महालेखाकार श्री जितेंद्र तिवारी हैं।

दिनांक 26.11.2019 को श्री डी. साहू जी की अध्यक्षता में नराकास, ग्वालियर की 82वीं अर्धवार्षिक बैठक संपन्न हुई। बैठक में 44 सदस्य कार्यालयों से कुल 75 अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। बैठक का आरंभ नराकास, सचिव श्री जितेंद्र तिवारी के उद्बोधन के साथ हुआ, जिन्होंने 30 सितंबर 2019 को समाप्त छमाही के हिंदी के प्रगामी प्रयोग से सम्बन्धित प्रतिवेदनों की समीक्षा का वाचन किया। उसके पश्चात माननीय अध्यक्ष महोदय श्री डी. साहू द्वारा उपस्थित समस्त सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों का व्यक्तिगत परिचय लिया गया तथा अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ चर्चा की गई। बैठक में माननीय अध्यक्ष महोदय श्री डी. साहू द्वारा वर्ष 2018-19 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन हेतु निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए गए-

1. पत्रिका पुरस्कार

(1) वर्ष में एक से अधिक अंक प्रकाशित करने वाले कार्यालय -

प्रथम - 'वीरांगना' - कार्यालय महालेखाकार (लेखा. एवं हक.) द्वितीय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र)

द्वितीय - 'दर्पण' - कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा. एवं हक.) प्रथम, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

(2) वर्ष में एक अंक प्रकाशित करने वाले कार्यालय -

प्रथम - 'प्रेरणा' - कार्यालय रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र)

द्वितीय - 'श्रेय' - प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

तृतीय - 'सुरभि' - केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-01 मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

2. राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्टता प्रदर्शित करने वाले कार्यालय -

प्रथम - कार्यालय महालेखाकार (लेखा. एवं हक.) द्वितीय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र)

द्वितीय - कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा. एवं हक.) प्रथम, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

तृतीय - प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

प्रोत्साहन पुरस्कार-(1) कार्यालय अधीक्षण अभियंता, राष्ट्रीय जल विकास प्राधिकरण, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

प्रोत्साहन पुरस्कार-(2) कार्यालय केंद्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर (प्रशस्ति पत्र)

बैठक के दौरान स्वल्पाहार वितरित किया गया व पुरस्कार वितरण के उपरान्त अध्यक्ष महोदय की अनुमति से सचिव महोदय के समापन भाषण के साथ बैठक संपन्न घोषित की गई।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति - ग्वालियर



82 वीं अर्द्धवार्षिक बैठक को संबोधित करते हुए माननीय अध्यक्ष, नराकास, श्री डी. साहू



बैठक में अर्द्धवार्षिक प्रतिवेदन की समीक्षा का वाचन करते हुए सचिव, नराकास, श्री जितेन्द्र तिवारी

**वर्ष 2018-19 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं
विभागीय पत्रिका पुरस्कार वितरण नराकास, ग्वालियर
अध्यक्ष, नराकास, ग्वालियर द्वारा पुरस्कार वितरण**



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.) द्वितीय, ग्वालियर शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए



कार्यालय रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना, ग्वालियर शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

**वर्ष 2018-19 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं
विभागीय पत्रिका पुरस्कार वितरण नराकास, ग्वालियर
अध्यक्ष, नराकास, ग्वालियर द्वारा पुरस्कार वितरण**



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.) द्वितीय, ग्वालियर शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए



कार्यालय केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ग्वालियर प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

**वर्ष 2018-19 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं
विभागीय पत्रिका पुरस्कार वितरण नराकास, ग्वालियर
अध्यक्ष, नराकास, ग्वालियर द्वारा पुरस्कार वितरण**



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.) प्रथम, ग्वालियर प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए



कार्यालय अधीक्षण अभियंता, राष्ट्रीय जल विकास प्राधिकरण ग्वालियर प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

**वर्ष 2018-19 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं
विभागीय पत्रिका पुरस्कार वितरण नराकास, ग्वालियर
अध्यक्ष, नराकास, ग्वालियर द्वारा पुरस्कार वितरण**



कार्यालय केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, ग्वालियर प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए



नराकास, ग्वालियर की 82 वीं अर्द्धवार्षिक बैठक में उपस्थित अधिकारी गण

वर्ष 2018-19 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं
विभागीय पत्रिका पुरस्कार वितरण नराकास, ग्वालियर



अध्यक्ष, नराकास, श्री डी. साहू बैठक को संबोधित करते हुए



नराकास, ग्वालियर की 82 वीं अर्द्धवार्षिक बैठक में उपस्थित सदस्य कार्यालयों के अधिकारी एवं कर्मचारी

**वर्ष 2018-19 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन एवं
विभागीय पत्रिका पुरस्कार वितरण
नराकास, ग्वालियर**



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर की बैठक के दौरान
श्री डी. साहू (अध्यक्ष, नराकास एवं प्रधान महालेखाकार)
श्री जितेन्द्र तिवारी, उप महालेखाकार (प्रशासन)
को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए।

